www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य वन्दना

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द अमृत वचन

युग प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

"नारी न केवल गृहस्थ जीवन की अपितु मानव–समाज की आधारशिला है। अतः उसका सुशिक्षित, सभ्य और सुसंस्कृत होना अनिवार्य है। जिस गृहाश्रम में धार्मिक विद्वान् और प्रशंसायुक्त पंडित स्त्री होती है वहाँ दुष्ट काम नहीं होते। वे ही स्त्रियां धन्य हैं जो अपने संतानों को विद्या और सुन्दर शिक्षायुक्त करने व कराने का निरंतर प्रयत्न करती हैं।"

निज स्वामियों के कार्य में समभाग जो लेती न वे,
अनुराग पूर्वक योग जो उसमें सदा देती न वे।
तो फिर कहाती किस तरह अर्धांगिनी सुकुमारियाँ,
तात्पर्य यह अनुरूप ही थी नरवरों की नारियाँ।।

–गुप्त जी

यह अंक आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के सौजन्य से प्रकाशित किया गया तथा आगामी अंक दयानन्द मठ दीनानगर के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : ७२वां विक्रमी सम्वत् २०७० सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११४ अक्तूबर २०१३

www.thearyasamaj.org

ऋग्वेद यजुर्वेद

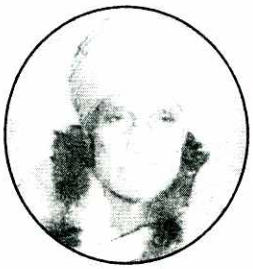
स्वामी सर्वानन्द

महर्षि दयानन्द

स्वामी स्वतन्त्रानन्द

आर्यों के तीर्थ

दयानन्द मठ, दीनानगर

जिला गुरदासपुर (पंजाब) को स्थापित हुए 75 वर्ष होने पर

हीरक जयन्ती समारोह

18, 19, 20 अक्टूबर, 2013

को बड़ी धूम—धाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जायेगा।
जिसमें आप सब महानुभाव सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक : स्वामी सदानन्द सरस्वती

सामवेद अथर्ववेद

अध्यक्ष दयानन्द मठ, दीनानगर एवं समस्त परामर्श समिति
सम्पर्क : 01875-220110, 094782-56272, 94172-20110

मुख्य संरक्षक	:	स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी महाराज, दयानन्द मठ, चम्बा मो. : 94180-12871
संरक्षक	:	रोशन लाल बहल, पूर्व प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र., मो. : 94180-71247
मुख्य परामर्शदाता	:	सत्य प्रकाश मेहंदीरत्ता, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. फोन : 01733.220060
परामर्शदाता	:	रत्न लाल वैद्य, उप-प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मो. : 94184-60332
विधि सलाहकार	:	प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), आर्य समाज-कण्डाघाट मो. : 94180-20633
सम्पादक	:	कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी), जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मो. : 94182-79900
मुख्य प्रबन्ध-सम्पादक	:	विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मो. : 94181-54988
प्रबन्ध-सम्पादक	:	1. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मो. : 94591-05378 2. मोहन सिंह आर्य, गांव चुरढ़, तह. सुन्दरनगर मो. : 98161-25501
सह-सम्पादक	:	राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला
कोषाध्यक्ष	:	मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू
मुद्रक	:	प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.)
नोट	:	लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा, उपकार्यालय मण्डी से प्रकाशित किया।

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

आज विश्व में वैज्ञानिकों ने मानवहित में क्रान्तिकारी कार्य किये हैं। आज विज्ञान और वैज्ञानिकों की सोच ने मानवता की होश उड़ा कर रख दी है। आज मानव की दशा और दिशा सुधारने में वैज्ञानिकों का सुन्दर और स्वस्थ सोच और योगदान रहा है। विज्ञान की वैशाखियाँ लेकर आज के मानव ने मछली की तरह जल में तैरना, पक्षी की तरह आकाश में उड़ना तो सीख लिया है, लेकिन मुनष्य की तरह पृथ्वी पर चल पाना आज तक वह ठीक प्रकार से नहीं सीख पाया है। आज भू–मण्डल पर मानवों के स्थान पर दानवों का साम्राज्य छाया हुआ है। अपनी बात की पुष्टी हेतु मैं केवल इतना ही कहूँगा कि आज मानव को पशु, पक्षी, जानवर और भूत–प्रेत से इतना खतरा नहीं है जितना मानव से है। आज मानव ने मानवता का चोला उतार कर दानव का दामन थाम लिया है। परिणाम स्वरूप ऐसे कार्यकलाप देखने–सुनने को मिल रहे हैं जो मानवता को शर्मशार करने में यथेष्ठ भूमिका निभा रहे हैं।

आज समाज के कर्णधार साधु–सन्त, पीर–फकीर, मौला, पादरी का एक वर्ग चाहे वह मुट्ठी भर ही क्यों न हों, सभी समाज की जड़ों को खोखला करने और शान्ति दीप जलाने के बजाये अन्धकार का ताण्डव नृत्य करने में योगदान दे रहे हैं। आज मानव को सबसे अधिक खतरा मानव से बना है। आज चारों और अशान्ति, हिंसा, अन्धविश्वासों का सामाज्य है। मानवता का सूर्य अस्ताचल को चला जा रहा है। अमावस्या की घन–घोर, अन्धेरी रात मानव को अपनी लपेट में लेने के लिये, अपने खूंखार नाखून और पंख फैला रही है। फिर सोचो, कहां जायें, कैसे बचायें और कैसे पृथ्वी पर शान्ति, प्रेम, भ्रातृभाव और अहिंसा का साम्राज्य स्थापित करें जो हमारे ऋषि–मुनियों का संकल्प रहा है। किसी राष्ट्र की संताने उस देश की संस्कृति को चार–चांद लगाती रही हैं। हमारे देश भारत के सम्बन्ध में प्रातः स्मरणीय श्री मैथिलीशरण गुप्त जी ने इस प्रकार अपने भावों को अभिव्यक्त करते हुये लिखा है :

भूगोल का गौरव प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहाँ ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगा जल कहाँ ?
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है ?
उसका कि जो ऋषि भूमि है, वह कौन भारत वर्ष है ?

सुन्दर छवि रखने वाला और स्वर्ग से भी प्यारे मेरे भारत देश को काले–जादू की छाया रखने वाले गोरे और काले बाबाओं ने ग्रसित कर दिया। साधारण और भोली–भाली जनता को भयाक्रान्त और अशान्त कर दिया। नाना प्रकार के भूत और प्रेतों की छाया उतारने के लिये डरा–धमका कर बालिकाओं को वासना का शिकार बनाया गया। पोल–पट्टी खुलने के डर से अनेकों पाप किये। आखिर जब पाप सामने आये, तो आंख के अन्धे और गांठ के पूरे इन धूर्त और दम्भी साधुओं को अफीम के नशे में नाबालिग बालिकाओं से अनाचार किया। परिणाम स्वरूप जेल की कोठरी में जाना पड़ा। यह इस देश का दुर्भाग्य ही है कि आज अनेक दम्भी और छली धूर्तों ने अपनी घिनौनी, भक्ति से भक्तों की आत्मा और अन्तर्मन को आहत किया है। आज चोरी और ठगी की दुकानदारी चली है। तभी राम भक्त तुलसीदास को समाज की बिगड़ती दशा का वर्णन इस प्रकार करना पड़ा :

कलिमल हरें धर्म सब लुप्त भये सद्ग्रन्थ,
दम्भिनी निज मत कथा करि प्रकट कियो बहुपन्थ।

आज चारों ओर अन्धविश्वास का साम्राज्य छाया है। कर्म को प्राथमिकता देने के बजाये लोगों को भाग्यवाद की दल–दल में फंसाया जा रहा है। इन बातों के निदान की आवश्यकता है। भारत में स्वार्थ और अभाव के अन्धेरे में अन्धविश्वास के बादल चारों और छाये हैं। अतः इस देश का प्रभु ही एक सहारा है। आज विश्व की आधी से अधिक आबादी नास्तिक बनती जा रही है। वे प्रभु के अस्तित्व पर ही प्रश्न वाचक चिन्ह लगा रही है। समाज में समस्त मर्यादा तार–तार हो चुकी है। आज रक्षक ही भक्षक हो गये हैं। पहरेदार ही चोर की भूमिका निभा रहे हैं और बाड़ ही खेत को खा रही है। आज राष्ट्र के ख्याति प्राप्त एक सुप्रसिद्ध अधिवक्ता भी मर्यादा पुरूषोत्तम राम को तथा उनके अनुज लक्ष्मण को कोसते नज़र आते हैं। श्री राम ने समाज में स्वस्थ परम्परायें स्थापित कर दीं लेकिन हमारे कानून के ज्ञाता को वे सब बातें पसन्द नहीं। मेरे सुन्दरनगर के एक ख्याति प्राप्त अधिवक्ता स्वर्गीय श्री डी. एन. पाठक साहिब ने कहा था कि हमारे सम्बन्ध में तो किसी ने यह कहा है :

पैदा हुआ वकील तो शैतान ने कहा,
लो आज हम भी साहिबे औलाद हो गये।

आज जेल की चार दीवारी में बन्द साधु–सन्तों धार्मिक नेता, पुलिस तथा भगवावस्त्रधारी साधु ही अनैतिक कार्य करने लगे हैं। दूसरी ओर पुलिस तथा मिडिया उनकी पोल खोलकर उनके कारनामों को समाज के सामने उजागर कर रहा है। आज समाज और राष्ट्र का निर्माण चरित्रवान व्यक्ति ही कर सकते हैं। आज हमें सोचना है कि धर्म, सत्य और हिंसा का गला घोंटने वाले मानवता का चोला पहने हुये इन दानवों का कैसे विनाश और सर्वनाश करके एक स्वस्थ

www.thearyasamaj.org

समाज की स्थापना की जाये ? कैसे इस देव–भूमि भारत में रामराज्य की स्थापना की जाये। भक्त तुलसीदास श्री राम का वर्णन करते हुये लिखते हैं :–

दैहिक, दैविक भौतिक तापा, राम राज्य नहीं काहुहीं व्यापा
सब नर करहूँ परस्पर प्रीति, चलहूँ स्वधर्म निरत श्रुति नीति।

इस प्रकार की भावना जब मानव के दिल और दिमाग पर शासन करेगी तो देश उन्नति के शिखर पर अवश्य पहुंचेगा। मेरा यह देश भारत पुनः विश्व शिरोमणि बनेगा। फिर देश और विदेश सभी जगह रामायण की सुन्दर चौपाईयें कर्णों में जाकर आनन्द का संचार करेंगी। हमें दानवता का त्याग करके मानवता का वरण करना ही होगा। इसका आचरण हमारे लिए वेद की शिक्षाओं का घर–घर प्रचार प्रसार करना होगा जो हमें यह बताती हैं कि हे कर्मशील मनुष्य उठ, आगे कर्तव्य पथ पर अग्रसर होकर अपने जीवन पथ को सार्थक कर। यही प्रगति का सर्वोत्तम सोपान है।

–कृष्ण चन्द

''आर्य समाज खरीहड़ी का १९ वां वार्षिक महोत्सव''

♦रमा शर्मा, खरीहड़ी

महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज खरीहड़ी का उन्नीसवां वार्षिक महोत्सव १८, १९ और २० सितम्बर को बड़ी धूमधाम भक्तिभावना और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

१८ सितम्बर की प्रातः वेला में ७:३० बजे से लेकर १० बजे तक गायत्री यज्ञ के साथ महोत्सव प्रारम्भ हुआ।

ओ३म् नाम का उद्घोष हुआ, यज्ञ हवन आदि मन्त्रों का आह्वान हुआ। १८ सितम्बर दोपहर ३ बजे से ४ बजे तक महिलाओं ने भजनों की अमृत वर्षा की।

शाम ७:३० बजे से १० बजे तक स्वामी सन्तोषानन्द जी, संचालक दयानन्द मठ घण्डरां, वीरी सिंह जी मण्डी जिला के सुप्रसिद्ध भजनोंपदेशक ने भजनों व प्रवचनों की झड़ी लगा दी।

इसी दौरान आर्य समाज के संरक्षक श्री कृष्ण चन्द आर्य की अध्यक्षता में स्वामी सन्तोषानन्द जी, वीरी सिंह जी और उनकी धर्म पत्नी को तालियों की गड़गड़ाहट में पुष्प मालाऐं पहना कर स्वागत किया गया।

स्वामी सन्तोषानन्द जी ने अपने प्रवचनों के द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए कहा कि प्रत्येक प्राणी को वेदों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए। हमें कभी किसी की निन्दा नहीं करनी चाहिए। मनुष्य अगर सच्चाई पर चलता है तो वह सबसे बड़ा तप है। हमें हमेशा सत्य का पालन करना चाहिए, सत्य की राह पर चलना चाहिए, सत्य पर दृढ़ विश्वास होना चाहिए, सत्य ही हमारा कल्याण करता है। जो तप हम करते हैं, उसमें भी सत्य और सच्चाई होनी चाहिए।

भजनोंपदेशक श्री वीरी सिंह जी ने भी अपने प्रवचनों व भजनों से सभी श्रद्धालुओं को भाव–विभोर किया।

१९ सितम्बर दोपहर ३ बजे से ५ बजे तक महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें ''माता निर्माता भवति'' विषय पर महिलाओं ने अपने–अपने विचार रखे। इस अवसर पर डॉ. सुकर्मा जी, आर्य समाज खरीहड़ी की सचिव सरला गौड़, रमा शर्मा, अर्चना, पूजा और रीशु ने अपने–अपने विचार रखे। कार्यक्रम की अध्यक्षा श्रीमती वनिता शर्मा जी ने भी सभी महिलाओं का मागदर्शन करते हुए कहा– कि माता द्वारा निर्मित संस्कारी और सुशिक्षित बेटा–बेटी ही कल के देश के कर्णधार बनेंगे। उन्होंने ₹ ५०० की राशि भी आर्य समाज को दान दी।

इस आध्यातिक बेला पर अर्चना जी, लीला जी, सुनीति जी और निरूला जी ने मधुर भजनों की अमृत वर्षा की।

२० सितम्बर को सुबह ८ बजे से १०.३० बजे तक गायत्री यज्ञ की पूर्णाहुति, भजनों, प्रवचनों और शान्ति पाठ के साथ दयानन्द मार्ग, आर्य समाज खरीहड़ी का वार्षिक महोत्सव बहुत ही आन्नद और हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

अन्त में सभी धर्म प्रेमियों ने ऋषि लंगर ग्रहण करने के पश्चात अपने–अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान किया।

''श्राद्ध''

पौराणिक जगत में मृतक श्राद्ध करने पर बहुत महत्व दिया गया है। उधर आर्य समाज के संस्थापक और वेदों के भाष्यकार स्वामी दयानन्द में केवल और केवल जीते पितरों की सेवा पर बल दिया है। लोगों के दिल और दिमाग में यह विचार अब भी घर किये हुये है कि हमारे पूर्वज जो इस नश्वर संसार को छोड़कर हम से विदा हो गये हैं अर्थात् उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया है। पितृ पक्ष में अपनी पुरानी यादों को सजाते हुये अपने घरों में आते हैं। सम्बन्धियों द्वारा उनकी स्मृति में तैयार किये भोजन को पण्डितों के द्वारा उन तक पहुंचता है। वे इसे ग्रहण करके परिवार वालों को आशीर्वाद देकर पुनः पितृलोक चले जाते हैं। एक साल के उपरान्त पुनः वापिस आते हैं। यह घोर पाखंड आज भी घर –घर में देखने को मिल रहा है। स्वामी दयानन्द के शिष्य बाबा रामदेव अपने भक्तों को इन पाखंडों से दूर रहने तथा जीवित माता, पिता और पूर्वजों की सेवा करने पर बल देते हैं। यही वास्तविक सत्य, धर्म और माता–पिता की सच्ची सेवा है।

www.thearyasamaj.org

"करवा चौथ व्रत"

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

करवा चौथ व्रत महिला कर्मचारियों में बहुत सर्वप्रिय है। सुहागनों में भी यह व्रत विशेष स्थान रखता है। परन्तु हिमाचल प्रदेश में इस व्रत का चलन पहले न के बराबर था। भला हो दूरदर्शन महाराज का जिस ने इसे खूब महिमा मण्डित किया। इस व्रत के विधि–विधान सिखाने में भी दूरदर्शन ने अग्रणी भूमिका निभाई। परिणाम स्वरूप शायद ही कोई ऐसी सुहागन होगी जो इस व्रत को न करती हो। एक दिन देर से खाने के बदले पति के एक वर्ष की सुरक्षा की गारन्टी प्राप्त हो जाती है। तो सुहागन यह अवसर हाथ से क्यों जाने दे ? बस इतना ही आवश्यक है कि सूर्य उदय के पूर्व तथा चन्द्रोदय तक कुछ नहीं खाना होता है। परन्तु उससे पूर्व और बाद में ठोंस–ठोंस कर खाने में कोई मना ही नहीं है। परन्तु इस व्रत के लाभों को सामने रखें तो चौदह या पन्द्रह घण्टे संयम करना घाटे का सौदा नहीं हैं। वैसे भी व्रत कथा अनुसार व्रत के मध्य कुछ खाने से यह खण्डित हो जाता है, जिससे अनिष्ट होने का डर रहता है। कथा की नायिका वीरवती द्वारा भी भाईयों के छल के कारण व्रत खण्डित हो गया था। फलस्वरूप उसके पति की मृत्यु हो गई। कौन ऐसी मूर्ख आभागिन होगी जो पुण्य बटोरने के स्थान पर पाप की भागीदार बने। इस कथा में भी लोभ तथा भय का समावेश है। अपशकुनों का भी सहारा लिया गया है। व्रत खण्डित होने के बाद जब वीरवती भोजन ग्रहण करने लगती है तो पहले ही कोर में बाल आया, दूसरे पर छींक आई और तीसरे पर पति के मृत्यु का समाचार मिला। शायद ससुराल निकट ही होगा। मोबाइल व दूरभाष का चलन था नहीं कि समाचार इतनी जल्दी मिलता। चमत्कार को नमस्कार तो करना ही होगा। रास्ते में वह रोती–धोती नहीं, अपितु बड़े–बूढ़ों का सदा सुहागन का आशीर्वाद प्राप्त करती रही। ससुराल पहुंच कर भी उसने रोने–धोने में समय नष्ट नहीं किया। पति के शव को उसने फूलों और कपड़े से ढांप दिया। चारों ओर जौ के आटे की रेखा लगा दी। ग्यारह दिन व्रत रखा। माता करवा उसकी निष्ठा तथा प्रायश्चित देख पसीज गई और उसके पति को पुनर्जीवित कर दिया।

हिमाचल सरकार ने इस व्रत पर महिला कर्मचारियों को छुट्टी दे, व्रत के महत्व को बढ़ा दिया है। छुट्टी के लिये विवाहित/अविवाहित, विधवा या सधवा होने की कोई शर्त नहीं। कंवारी लड़कियों के लिये शिव पार्वती की कथा भी व्रत के साथ जोड़ दी गई है। पार्वती ने अपना मन चाहा वर पाने के लिये यह व्रत किया था। रहा विधवाओं का प्रश्न, जब सरकार दे रही है तो लेने में क्या हर्ज है। आखिर वे भी महिला कर्मचारी हैं। जिन स्कूलों और कार्यालयों में महिला कर्मचारी अधिक हैं, वहां भूले से भी किसी काम से उस दिन न जायें। कार्यालय या स्कूल खुला होगा परन्तु सारा कार्य ठप होगा। अनुशासन तथा कार्य के बारे न ही पूछें तो भला होगा।

इस व्रत में महिलाओं को अपने पति और सास को प्रसन्न करने का अवसर मिल जाता है। पति तो विचारा इस एहसान से दब जाता है कि इतना कठिन व्रत पत्नी उसकी सुरक्षा तथा दीर्घायु के लिये कर रही है। व्रत में सासु माँ को सरगी देने का विधान है। सरगी में सुहागिन के सजने का सामान, मिठाई, मेवा, वस्त्र इत्यादि होते हैं। सरगी में भी कुछ आधुनिकता आ गई। क्यों न आये ? आखिर जेब तो पतिदेव की ढीली होनी है। वह मुफ्त यश प्राप्त कर लें तो इस में बुरा क्या है ? ऐसे कामों में कंजूसी नहीं की जाती।

यह अवसर स्त्रियों के सजने तथा संवरने का भी होता है। एक दिन पूर्व सभी हाथ पांव में मेहन्दी लगाती हैं। कई तो ब्यूटी पार्लर जा कर सज्जा का शुभारम्भ करवाती हैं। जिन्होंने सारी आयु परम्परागत वस्त्रों में बिंता दी, वे भी उस दिन साड़ी पहनना नहीं भूलतीं। दूरदर्शन वाली ने भी साड़ी ही तो पहनी थी। गहने यूं तो पहने नहीं जाते। गुम होने, चोरी होने का डर तो लगा ही रहता है। आज कल गहने स्नैचर का भी डर रहता है। गहने भी गंवाओं और नाक या कान भी घायल करवाओ। यूं भी अभ्यास न रहने पर नाक–कान में पीड़ा हो जाती है। चलो इस बहाने गहनों को हवा तो लग जाती है। एक दिन ही सही, गहनों का लाभ तो मिला। सासु माँ भी चाहती हैं कि बहु यह व्रत रखे। वह व्रत रखेगी तभी तो उसे सरगी मिलेगी। इस व्रत के बहाने जीवन में एक परिवर्तन हो जाता है और एक दिन चैन से सज्जने संवरने का भी मिल जाता है। नहीं तो फास्ट लाईफ में चैन कहाँ ? कोई मूर्ख ही होगी जो इस अवसर को खो देगी। स्वामी दयानन्द जी रोगी, गर्भवती तथा युवा स्त्रियों को व्रत न रखने के लिये कहते हैं। ऐसी सलाह चिकित्सक भी देते हैं। परन्तु जिस रास्ते सभी जायें, वही रास्ता सुरक्षित माना जाता है। कौन अन्य स्त्रियों की आलोचना का व्यर्थ में सामना करे ?

इस व्रत कथानुसार वेद शर्मा ब्राह्मण इन्द्र प्रस्थ में रहता था। उस के सात पुत्र और एक पुत्री वीरवती थी। वीरवती का विवाह सुदर्शन नाम के युवक से हुआ था। विवाह के तीन

www.thearyasamaj.org

दिन पश्चात करवा चौथ आई। वीरवती ने अपने पति के लिये व्रत रखा। परन्तु पूजा से पूर्व ही उसकी भूख–प्यास से बुरा हाल हो गया। भाईयों से उस का कष्ट देखा न गया। उन्होंने कृत्रिम चन्द्रोदय पीपल के वृक्ष के पीछे से बता दिया और उसे खाना खिला दिया। व्रत खण्डित होने के दुष्परिणाम बता चुके हैं परन्तु हैरानी की बात यह है कि ग्यारह दिन के पश्चात मृत, पुर्नजीवित हो गया। समय गुजारने के लिये स्त्रियां गीत, संगीत तथा मनोरंजन का सहारा लेती हैं। सभी दीपक, छलनी, मिठाई तथा जल से अपने पूजा के थाल को सजाती हैं। शिव पार्वती की कहानी से आरम्भ कर कथा सुनाती हैं तथा अपने थाल भी बदलती रहती हैं। जो थाल कथा के अन्त में जिस के पास होता है, चन्द्रोदय पर उसी से पूजा करती हैं। छलनी में दीपक रख चन्द्रमा के दर्शन कर, पति का मुख देखती हैं और आरती उतारती हैं। पति से पानी ग्रहण कर व्रत पूर्ण करती हैं। छलनी में दीपक रख चन्द्रमा तथा पति का मुख देखने का कारण कोई भी स्त्री न बता सकी। केवल विधि–विधान बताती रहीं। आठ सन्तानों की कल्पना इस मंहगाई के जमाने में झुरझुरी उत्पन्न कर देती है। दूसरे आजकल मृत शरीर में दूसरे दिन ही बदबू आने लगती है। कैसा समय होगा जब ग्यारह दिन तक शरीर सुरक्षित रहा। आजकल तो हिमशिलायें रखकर मृत शरीर को सड़ने गलने से बचाते हैं। हमें यह बात समझनी चाहिये कि यह व्रत आस्था पर अधारित है और आस्था में तर्क के लिये स्थान कहां ?

''मलिन मानसिकता का 'मनोविज्ञान' व बढ़ता हुआ बलात्कार''

♦आचार्य आर्य नरेश, उद्गीथ स्थली (हि० प्र०)

'मैं नारी भोग्य वस्तु नहीं राष्ट्र–निर्माण शक्ति हूँ' यह नारी पूज्या है। आज समाज में बढ़ती हुई बलात्कार की घटनाओं से प्रत्येक सद्नागरिक चिन्तित है। सार्वजनिक फांसी आदि की सजा से इसे एक सीमा तक रोका जा सकता है। यह भी विचारना आवश्यक है कि वर्तमान में इन की अत्याधिक वृद्धि का मूल कारण क्या है ? चारों ओर से स्वर गूंज रहा है कि समाज की मानसिकता को बदलना होगा। अर्थात् नारियों के प्रति पुरुषों का व्यवहार पहले ऐसा नहीं था जो अब हो गया है। व्यक्ति की अच्छी अथवा बुरी मानसिकता ही उसके कर्मों का आधार है। वैदिक आचार्यों का अनुभूत कथन है कि 'यद मनसा विचार्यात तद् कर्मणा करोति' अर्थात् जो व्यक्ति मन में संस्कार रखता है वैसा ही अच्छा या बुरा कर्म करता है। महाभारत काल में दुर्योधन ने कहा था–'जानामि धर्मम् न च मे प्रवृत्ति' अर्थात् मैं धर्म को जानता हूँ परन्तु अपने मन के गहरे कुसंस्कारों में बंधे होने के कारण पाप कर देता हूँ क्योंकि मेरे ह्रदय में विराजमान मन रूपी महाशक्ति मुझे पाण्डवों के विरूद्ध प्रेरित करती है। दुर्योधन का मन गन्दा किसके कारण हुआ ? उसके मामा शकुनि व कुछ पिता धृतराष्ट्र के कारण। यह कटु सत्य है कि जो व्यक्ति जिस वातावरण में अथवा व्यक्तियों में अधिक रहता है, जैसी बातें सुनता तथा देखता है वह वैसा ही बन जाता है। इन्द्रिय संयम, ब्राह्मचर्य, प्रभु की व्यापकता तथा उसके बिना क्षमा पाप कर्म का फल। सब आस–पास रहने वाली हमारी माँ बहन बेटी हैं, नारियां राष्ट्र की आधार शिला हैं, वे राष्ट्र की जननी ही नहीं अपितु अपने सुधार्मिक–अनुशासित तथा देश–भक्ति पूर्ण संस्कारों और वातावरण से अच्छे परिवार, समाज और राष्ट्र का निर्माण करती हैं। हमें सदा नारी जाति के प्रति आदर युक्त विनम्रता की मानसिकता बनानी चाहिए। परन्तु सत्य यह है कि सुमानसिकता कहने मात्र से नहीं, संस्कारी वातावरण की निरन्तरता से बनती है। यदि कहने मात्र से व्यक्तियों की विचार धारा बदलने वाली हाती तो आज दूरदर्शन पर अनेक नामी प्रवचन कर्ताओं के प्रवचनों से भारत स्वर्ग बन गया होता। क्या बराबरी व प्रगति का प्रमाण पत्र मात्र अंग प्रदर्शन है ?

मानसिकता का परिवर्तन व्यवहारिक आचरण पर निर्भर करता है एवं उसका सच्चा गहरा संस्कार विद्यार्थी काल के कोमल जीवन पर पड़ता है। अपनी माँ बहन बेटी के समान महिला मात्र के प्रति श्रेष्ठ मानसिक संस्कार डालने वाला किसी पाठ्यक्रम का 'पाठ' प्रथम से १२वीं कक्षा अथवा किसी स्कूल कालेज या अन्य भारत सरकार द्वारा संचालित संस्थान में क्या पढ़ाया जाता है ? जब ये पाठ प्राचीन आर्यावर्त भारत में पढ़ाये जाते थे तब किसी एक आध दुष्ट मानसिकता की घटना होती थी। लोग ध्यान दें कि मादा पशु लज्जायुक्त होने से नग्न रहती है एवं नर पशु (बच्चा इच्छा बिना) बलात् भोग नहीं करते। मर्यादा ही रोकेगी जो हर गली, हर ग्राम, हर नगर, हर सड़क व हर संस्थान में बलात्कार हो रहा है। गंदी मानसिकता के परिवर्तन हेतु कितने घर, विद्या संस्थान अथवा कार्य संस्थान हैं जहाँ की दीवारों पर चरित्र, ब्रह्मचर्य, संयम अथवा महिलाओं को माँ, बहन बेटी एवं पुरुषों को पिता, चाचा व भाई समान देखने की शिक्षा दी गई है ? कितनी ऐसी लड़कियां व महिलाएं हैं जो अपने आप को बहन, दीदी, चाची वा माता का सम्बोधन सुनने पर प्रसन्न होंगी ? कितने ऐसे लड़के एवं पुरुष हैं जो लड़कियों और महिलाओं द्वारा भाई, चाचा, मामा अथवा पिता

www.thearyasamaj.org

का सम्बोधन सुनने पर प्रसन्न होंगे ? आज यदि कॉलेज में कोई पवित्र मानसिकता वाले लड़के अथवा लड़कियाँ अपने सहपाठियों को भाई वा बहन कहके पुकार दे तो उनकी हंसी उड़ाकर अपमानित कर दिया जाता है कि यह कितने पिछड़े हुए विचारों का है। ध्यान रहे सद् उपदेश से सद् संस्कार व उसके अनुसार क्रिया करने से ही मानसिकता तथा वातावरण बनता है। दुःख से कहना पड़ता है कि अंग्रेजियत तथा अकबरी दुष्टता ने पुरुषों एवं महिलाओं के मध्य भाई–बहन, पिता–पुत्री की पावन भावना को समाप्त करके महिलाओं को चीज मस्त, मुन्नीबाई, जलेबी बाई, हलकट जवानी, चोली के नीचे वाली, फैवीकोल व शीला बाई बना दिया है एवं पुरुषों की मानसिकता को उनका भोक्ता।

क्या इन सब अश्लीलता तथा कामुकता पूर्ण नग्न नृत्यों और अर्धनग्न अंग्रेजियत से पुरुषों की मानसिकता अच्छी बन सकती है ? क्या भाई–बहन के स्थान पर हाय–बाय कहने से बलात्कार घटेंगे ? ध्यान रहे घर की माँ, बहन, बेटी भी महिला है परन्तु उसके प्रति इसलिए मानसिकता पवित्र होती है क्योंकि वहां मन में बाल्यकाल से उनके प्रति मां बहन भाई कहने एवं समझने की भावना भरी जाती है। बलात्कारों को ६६ प्रतिशत समाप्त करने हेतु 'नारियां धरती भर के करोड़ों पुरुषों को योगी बनाने का झूठा स्वप्न न देखकर नग्न कुप्रदर्शन व भोग्य चीज बन कर परोसने का प्रयास न करें। पैरों को काटों से बचाने हेतु, सम्पूर्ण धरा चमड़ा चढ़ाने की अपेक्षा अपने पैरों को जूतों से ढककर रखना ही बुद्धिमत्ता है। भारतीय संस्कृति में श्रृंगार का विरोध नहीं नग्नता का विरोध है। किसी को 'लवण भास्कर' खिलाकर भूख हटाने की व जमाल घोटा खिलाकर शौचालय न जाने की बात करना महामूर्खता है। वैदिक आचार्यों का अनुभूत विज्ञान है कि कार्य का होना कारण पर निर्भर करता है। केवल कहने से मानसिकता नहीं बदलती। क्या नारी स्वतन्त्रता नरवत एक कच्छे में खुले स्नान से है ? पेट्रोल व आग को बिना सुरक्षित कवच के साथ रखकर न जलने की बात कहने वाले क्या बुद्धिमान हैं ? बलात्कार उन देशों में कम हैं जहाँ नारी की नग्नता पर प्रतिबन्ध व कुकर्मी को फांसी की सजा है। विवाह से पूर्व लड़के–लड़की का अनैतिक मिलन, अश्लील नग्न सिनेमा, सीरियल–विज्ञापन व शराब पर प्रतिबन्ध लगे। अच्छे वातावरण से अच्छी मानसिकता ही बलात्कार का पूर्ण समाधान है। यदि किसी देश में नग्नता–अश्लीलता होते हुए भी बलात्कार नहीं होते तो वहां के लोगों का मन खुले सैक्स से मिठाई हलवाई के समान भर चुका है।

''पुस्तक समीक्षा''

♦इन्द्रजित्देव, चूना भट्ठियां, यमुनानगर (हरियाणा)

नामः उत्कृष्ट शंका समाधान। प्रकाशकः दर्शन योग महाविद्यालय, आर्य वन, रोजड़, पत्रालय सागपुर, जिला साबर काण्ठा (गुजरात) पिन ३८३३०७ मूल्य ६५/–रुपये। समाधानकर्त्ताः स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक। सम्पादकः डॉ. राधा वल्लभ चौधरी। पृष्ठ संख्याः ३४४

मनुष्य सर्वज्ञ नहीं है। वह पुस्तकों, सत्संगों व सी. डी. आदि के अतिरिक्त स्वचिन्तन से ज्ञान प्राप्त करता है परन्तु फिर भी कुछ शंकाएं, उत्सुकताएं, प्रश्न व जिज्ञासाएं रहती हैं। आर्य समाज से बाहर किसी भी संस्था में पाठकों–श्रोताओं की जिज्ञासाओं व शंकाओं के समाधान नहीं किए जाते। आर्य समाज में यह परम्परा महर्षि दयानन्द ने चलाई कि श्रोताओं को प्रश्न पूछने का अधिकार दिया जाए। इसका निर्वहन बाद के कई विद्वानों ने किया। इनमें पं. जगदेव सिंह सिद्धान्ती, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी रामेश्वरानन्द, पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय व पं. रामचन्द्र देहलवी जैसे अनेकों विद्वानों के नाम उल्लेखनीय हैं। वर्तमान में भी यह क्रम जारी है परन्तु आर्य समाज में स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक प्रथम उपदेशक हैं जिनके समाधान विभिन्न विषयों पर एक ही ग्रंथ में उपलब्ध हो रहे हैं।

इससे पूर्व वानप्रस्थ साधक आश्रम, गुजरात ने इसका प्रथम खण्ड प्रकाशित करने का स्तुत्य कार्य किया था व हमें विश्वास है कि तीसरा खण्ड भी शीघ्र सुधीजनों के हाथों में आएगा। ऐसे ग्रन्थ अवैदिक सम्प्रदायी संस्थाओं के यहाँ होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। आर्य समाज में भी लगभग अनुपलब्ध ही हैं। ऐसे ग्रन्थ पाठकों, श्रोताओं व शिविरार्थियों की मानसिक, आध्यत्मिक तथा सामाजिक उन्नति में अधिक सहायक हो सकते हैं, विशेषतः उनके लिए जो योग मार्ग के पथिक बनकर आगे बढ़ना चाहते हैं व सच्चे ईश्वर की सच्ची व्यवस्था को समझना चाहते हैं। दर्शन योग महाविद्यालय के अतिरिक्त भी ग्रंथ १४ अन्य स्थानों से प्राप्त किया जा सकता है जिनमें ऋषि उद्यान, अजमेर; आर्य प्रकाशन, दिल्ली; गोबिन्द राम हासानन्द, दिल्ली व कुछ गुरुकुलों, आर्य समाजों व व्यक्तियों के नाम व पते ग्रन्थ में दिए गए हैं।

ग्रन्थ में २६३ लौकिक व पारलौकिक प्रश्नों के दार्शनिक, प्रामाणिक, सटीक व युक्तियुक्त उत्तर प्रकाशित हैं जो मन व मस्तिष्क को आन्दोलित करने में पूर्णतः सक्षम हैं। ग्रन्थ का कागज़ व सम्पादन उत्कृष्ट है परन्तु मुद्रण–दोष से रहित नहीं है। मूल्य न्यून ही है। भाषा की सरलता के नाम पर कुछ नये प्रयोग किए गए हैं जिन पर मतभेद की संभावना है।

www.thearyasamaj.org

(१ अक्तूबर, वरिष्ठ नागरिक दिवस पर)

''जीवन संध्या''

♦विनोद स्वरूप, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

वर्तमान में बदलते लाइफ स्टाइल और पाश्चात्य सभ्यता के चलते कहीं न कहीं बुजुर्गों के प्रति समाज का नजरिया बदल रहा है। आज युवा पीढ़ी के पास वृद्ध माता–पिता के लिए समय नहीं क्यों कि आगे बढ़ने की ललक इन में इतनी बढ़ चुकी है कि रिश्ते बोझ लगने लगे हैं। युवाओं की यह बेरूखी बुजुर्गों में इमोशनल अटैचमेंट खत्म कर रही है। मध्य वर्गीय बहुत से वरिष्ठ नागरिक ऐसे हैं जिनका कोई सहारा नहीं, न नौकरी, न बैंक बैलेंस, न पैंशन, न कोई मेडिकल केयर। इस वर्ग की दशा अधिक दयनीय है जो आप तीन चार बच्चों का पालन पोषण करते न थके, न हारे, न ऊबे, न निराश हुए, आज उन्हीं की चारपाई घर के ड्राईंग रूम से ओझल हो गई है। घर के किसी कोने में पड़े वे सहारा तलाशते हैं कि कोई दो मिनट उनके साथ शेयर कर ले, उन का सुख–दुःख सुन ले। बुढ़ापा आते–आते बेटे और बेटियों की शादीयाँ हो जाती हैं। बेटों को बहुऐं और बेटियों को दामाद ले जाते हैं और फिर वृद्ध माता–पिता के हिस्से रह जाता है अकेलापन और तन्हाई। जिला मण्डी की बल्ह घाटी के गांव कैहड की ६४ वर्षीय विधवा रेशमू देवी की व्यथा इस का जीता जागता उदाहरण है। रेशमू का बड़ा बेटा जो प्रदेश सरकार के अहम पद से सेवानिवृत हुआ है तथा दूसरा बेटा वकील है। दोनों बेटों की उपेक्षा की शिकार वृद्धा को एक कमरे में कैदी का सा जीवन जीने के लिए अपने हाल पर छोड़ दिया। उसकी दयनीय स्थिति पर तरस खा कर कैहड़ पंचायत के सदस्यों ने महिला आयोग की अध्यक्ष धनेवश्वरी ठाकुर से गुहार लगाई। गुप्त सूचना के आधार पर महिला आयोग ने वृद्धाश्रम भंगरोटू के प्रधान श्री दिनेश विशिष्ट से विनती की कि उक्त महिला को आश्रम में प्रवेश दिया जाय। किस्मत की मारी रेशमू को अन्धेरी कोठरी से आज़ाद करवाया। अब वह जीवन की अन्तिम सांसें वृद्धाश्रम में चैन से ले रही है। ऐसी दयनीय स्थिति देख कर हम कह सकते हैं–

मरने लगी संवेदना, हुआ खत्म सद्भाव।
पूर्व पर भी हो गया, पश्चिम का प्रभाव।।

जीवन की संध्याबेला में शरीर में बहुत से परिवर्तन दिखने लगते हैं। वह शीघ्र थकने लगता है, मानसिक व्याधियाँ शरीर को जर्जर कर देती हैं। दो मीठे बोल व सहानुभूति के कुछ शब्द वृद्ध व्यक्ति के जीवन को खुशी से भर देते हैं। किस्मत वाले हैं वे बुजुर्ग जिन को परिवार में यथोचित आदर–सत्कार मिलता है। यदि किसी कारण घरेलू परिस्थितियाँ आप के विपरीत हैं। अपेक्षाओं के प्रतिकूल आप से व्यवहार हो रहा है तो गुस्सा होने की अपेक्षा शान्त रहें और बदलती परिस्थितियों को स्वीकार करने की आदत डालें। आज के बच्चों को नसीहत तीर की तरह चुभती है और वे इसे अपनी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता में बाधा मानते हैं इसलिए नसीहत देना छोड़ दें। जमाना कम्प्यूट्राईज़ड हो गया है इसलिए अपने को बच्चों के विचारों के अनुरूप ढ़ालने का प्रयत्न करें। अपने जीवन में पीछे मुड़ कर देखें और सुखद क्षणों को स्मरण कर आनन्द का अनभुव करें। वरिष्ठ नागरिक के बाल यदि शत–प्रतिशत सफेद हो गये हैं तो इस का मतलब ये नहीं कि उसका पौरूषत्व समाप्त हो गया है। वृद्ध यदि पूर्ण रूप से रोगमुक्त है और सन्तुलित आहार ग्रहण करता है तो इस स्थिति में अपनी आयु, सामाजिक मर्यादा, अर्जित प्रतिष्ठा को मद्देनजर रखते हुए वासना को अपने पर हावी न होने दें। संयमित जीवन जीने के लिए मन को स्थिर बनाने का अभ्यास आवश्यक है। मन की चंचलता वरिष्ठ नागरिक की प्रतिष्ठा, आन और शान को मटियामेट करने में देर नहीं लगाती। ७४ वर्षीय दुधिया दाढ़ी मूंछ वाला कथावाचक आशा राम का उदाहरण हमारे सामने है। करोड़ों भक्तों का गुरू पूर्ण रूप से रोग मुक्त, रासायनिक खाद और कीटनाशक रहित अन्न, दूध, फल, मेवे खाकर स्याह काले कारनामे करना वाला वरिष्ठ नागरिक। प्रतिवर्ष पहली अक्टूबर को विभिन्न सामाजिक संस्थाऐं 'वृद्ध एवं वरिष्ठ नागरिक दिवस' का आयोजन कर अति वरिष्ठ नागरिकों को फूलमालाऐं पहना कर शाल और टोपी भेंट कर सम्मानित करती हैं। वर्ष में मात्र एक दिन वृद्धों के लिए विशेष दिवस मना कर हम अपने कर्त्तव्यों की इति श्री कर निश्चिंत हो जाते हैं। वर्ष के शेष ३६४ दिन ये बेचारे कितने शारीरिक, मानसिक कष्ट, अकेलापन और बुढ़ापे की समस्याओं से दो चार होते हैं इस का अनुमान संस्थाऐं नहीं लगा पातीं। हमारे राजनीतिक नेता भी वृद्ध एवं वरिष्ठ नागरिकों के प्रति उदासीन हैं। उनके लिए सीनियर सिटीजन का बोट बैंक इतना ठोस नहीं और न ही संगठित, इसलिए वृद्धों को प्राथमिकता से दूर रखा जाता है। वृद्धों की देखभाल के लिए जो सरकारी नीतियाँ और एक्ट बनाये गये हैं उन्हें ठीक ढ़ंग से लागू नहीं किया गया है। संसद भवन में लोकसभा अध्यक्ष के आसन के पीछे दीवार पर बड़ा सुन्दर और प्रेरणाप्रद MOTO लिखा है– 'न शोभते सः सभा यत्र न सन्ति वृद्धा'।

क्या यह ध्येय वाक्य केवल वृद्ध सांसदों तक ही सीमित है ?

www.thearyasamaj.org

दोषी कौन ?

•कृष्ण चन्द आर्य

महाभारत में श्रीकृष्ण को अपना साथी, पथ प्रदर्शक बनाकर पाण्डवों ने धर्म युद्ध लड़ा और विजयी बनें। योगीराज श्री कृष्ण के दुर्योधन, शकुनि, दुशासन की जुण्डली को बहुत समझाने का प्रयत्न किया और भरी सभा में उन्होंने पाण्डवों के लिये केवल पांच गांव मांगे, जिससे महान् रक्तपात होने से बच जाये। योगेश्वर कृष्ण युद्ध के भावी परिणाम को जानते थे। उन्होंने अपने भीतरी चक्षुओं से जिसमें लाखों मातायें पुत्रहीन, पत्नियें विधवा और बहिनें भाईयों से रहित और बच्चे अनाथ हो जाऐंगे के दृश्य को देख लिया था। तभी वे बार–बार धृतराष्ट्र को और उसके परम प्रिय पुत्र दुर्योधन को समझाने का प्रयत्न करते रहे। लेकिन वहाँ तो कुछ और ही पक रहा था। वह समझता था कि यदि मैंने श्री कृष्ण को सलाखाओं के पीछे भेज दिया तो पाण्डवों की रीढ़ की हड्डी टूट जायेगी। उनका मार्ग–दर्शक कोई नहीं रहेगा और वे फूल की पंखुडियों की तरह आसानी से मसल दिये जायेंगे। श्री कृष्ण को दुर्योधन की चाण्डाल चौकड़ी के षड़यन्त्र का पता लग चुका था। उन्होंने भी सभा में दुर्योधन को फटकारते हुये कहा कि मैं यह पहले ही जानता था कि तुम मुझे बन्दी बनाने का षड़यन्त्र भी रच सकते हो। मैं पूरी तैयारी से यहाँ आया हूँ। इस भरी सभा में गदाधारी भीम, गाण्डीव धनुर्धारी अर्जुन पहले से भेष बदलकर तुम्हारे किसी भी कुत्सित विचार का उत्तर देने के लिये यहीं बैठे हैं। तुम चाहो तो मुझे बन्दी बनाकर उसके परिणामों को अभी देख सकते हो। भीष्म पितामह द्रौणाचार्य और यहाँ तक धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को फटकारा। पितामह भीष्म ने कहा कि श्री कृष्ण शान्ति दूत बनकर यहाँ आये हैं। उन्हें बन्दी बनाने की बात सोची भी नहीं जा सकती। भारत माँ को रक्त रंजित होने से बचाने के लिये वह तो पाण्डवों के लिये केवल पांच ग्राम ही मांग रहे हैं। यह प्रस्ताव हाल में मान लिया जाना चाहिये। दुर्योधन ने डरकर श्री कृष्ण को बन्दी बनाने का विचार छोड़ दिया। पाण्डवों को पांच ग्राम देने के प्रस्ताव का सभी ने समर्थन किया। इस पर क्रोध में लाल होकर दुर्योधन ने माधव के शान्ति प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया। उसने बड़े गर्व से ऊँचे–उँचे स्वर में कहा "शुच्यग्रे न दास्यामि, बिना युद्धेन केशव।" हे कृष्ण मैं बिना युद्ध के सुई की नोक के बराबर भूमि भी पाण्डवों को नहीं दूंगा। श्री कृष्ण ने भीष्म, द्रोणाचार्य, कुलगुरू कृपाचार्य और राजा धृतराष्ट्र को कहा कि आप दुर्योधन, शकुनि, कर्ण और दुशासन को पकड़कर पांडवों के हवाले कर दें। अब युद्ध केवल तभी टाला जा सकता है। धृतराष्ट्र पुत्र मोह में बन्धा था। वह कैसे अपने बेटे के विरूद्ध बोलता। बस इस पुत्र मोह में लाखों व्यक्तियों को मरवा डाला। मातायें, पत्नियें बहिनें और बच्चों के आंसुओं ने एक कारूणिक दृष्य खड़ाकर दिया। यह था पुत्र मोह का परिणाम। दुर्योधन न समझा और न माना। फिर युद्ध का आरोप श्री कृष्ण के सिर मढ़ देना कितना तर्कहीन, अन्यायपूर्ण और असत्य था। श्री कृष्ण तो दुर्योधन के कन्धे पर हाथ रखकर उसे एकान्त में ले गये। उन्होंने कहा, तू ऊँचे कुल का शूरवीर है। तपस्वी माता–पिता का पुत्र है। द्रोणाचार्य कृपाचार्य और भीष्म पितामह जैसे योद्धाओं का हाथ और साथ तेरे साथ है। इन युद्ध के काले बादलों को केवल तू ही टाल सकता है। श्री कृष्ण के इन मार्मिक शब्दों से दुर्योधन के अपने हृदय की बात इस प्रकार कह ही डाली–

जानामि धर्म न च मे प्रवृति।
जानामि अधर्म न च मे निवृति।।
केनापि देवेन हृदिस्थितेन।
यथा नियोजोऽस्मि तथा करोमि।।

मैं धर्म और अधर्म, दोनों को जानता हूँ। लेकिन धर्म में मेरी रूचि नहीं है और अधर्म से मुझे घृणा भी नहीं है। मेरे हृदय में कोई देवता बैठा है जो मुझसे सब कुछ करवाता है। मेरे मन और मस्तिष्क पर मेरा अपना अधिकार नहीं है। श्री कृष्ण ने उसे चेतावनी देते हुये यही कहा कि यदि तू युद्ध ही चाहता है तो इस सर्वनाश से कोई नहीं बचा सकता। श्री कृष्ण की शान्ति वार्ता असफल जरूर हुई। लेकिन उन्होंने पाण्डवों के पक्ष में वातावरण तैयार अवश्य कर दिया। द्रोणाचार्य, कुलगुरू कृपाचार्य, विदुर और भीष्म पितामह ने शान्ति दूत श्री कृष्ण के सुझावों का समर्थन किया। उन्होंने महाराजा धृतराष्ट्र को श्री कृष्ण के शान्ति प्रस्ताव के अनुसार पाण्डवों को पांच गांव देने के प्रस्ताव को स्वीकार करने का निवेदन किया ताकि भारत भूमि में युद्ध के घटाटोप बादलों की गर्जना और तर्जना जो कानों में सुनाई दे रही है साकार न हो सके। अन्यथा युद्ध में होने वाले रक्तपात का समस्त दायित्व इतिहासकार आप दोनों बाप–पुत्र के कन्धों पर डालेंगे। धृतराष्ट्र पुत्र मोह के कारण लाचार था। उसकी आंखें तो चली गई थी लेकिन पुत्र मोह ने बुद्धि की ज्योति भी छीन ली थी। योगीराज शान्ति दूत कृष्ण ने तो भीष्म के बाणों से मारी जा रही पाण्डव सेना को बचाने के लिये रथ का टूटा पहिया उठाकर भीष्म की ओर लपके क्योंकि अर्जुन अनमने दिल से पितामह से युद्ध कर रहा था। इस विकट परिस्थिति को देखते हुये। अर्जुन ने श्रीकृष्ण को पितामह भीष्म से डटकर युद्ध करने का आश्वासन दिया। उधर

www.thearyasamaj.org

पितामह ने श्री कृष्ण को प्रणाम करते हुये कहा कि आपने तो युद्ध में हथियार न लेने का व्रत लिया था। आपके हाथों मरना अब मैं एक वरदान से कम नहीं मानूँगा। आज आपको मुझे मारने के लिए अपनी प्रतिज्ञा के विपरीत शस्त्र उठाने के लिए बाध्य होना पड़ा। श्री कृष्ण ने गर्जते हुये पितामह को युद्ध का दोषी ठहराया। उन्होंने कहा न मालूम सत्य, न्याय और धर्म का गला काटते देख तुम्हारी वाणी क्यों मौन होती रही ? उसी परिणामस्वरूप आज यह दिन देखने पड़ रहे हैं। अब जो होना था हो रहा है और कुछ ही दिनों में हार जीत का निर्णय हो जायेगा। लेकिन उस आर्तनाद का क्या होगा जो युद्ध के बाद लम्बे समय तक सुनाई देता रहेगा ? यदि आप दुर्योधन के अन्याय और अत्याचार पर उसे तुरन्त बन्दी बनाने का आदेश महाराज धृतराष्ट्र से मांगते तो उनका पुत्र मोह भंग हो जाता। आपके और गुरू द्रोणाचार्य के तने हुये तेवर देखने मात्र से धृतराष्ट्र को आप दोनों के बिना अपनी औकात का ज्ञान हो जाता। लेकिन मान्यवर आप ऐसा नहीं कर पाये। राष्ट्र को महान् रक्तपात से बचाने की शक्ति और सामर्थ्य रखते हुये भी आप मूक दर्शक की भूमिका निभाते रहे। कुरूक्षेत्र के इस धर्म युद्ध में अनेकों योद्धा मारे जा रहे हैं। माताओं के लाल, बहिनों के भाई, बालक–बालिकाओं के पिता, युवतियों के पति सदा और सर्वदा के लिये अपने हरे–भरे परिवारों को रोते, चिल्लाते और बिलखते छोड़कर संसार से विदा हो रहे हैं। बाद में युधिष्ठिर शर–शैय्या पर लेटे हुये पितामह भीष्म से आंसुओं की वर्षा न रोक पाते हुये अपने आप को इस युद्ध का दोषी मानते हुये पूछते हैं – "मैं तो शमशान भूमि का राजा हूँ। रात–दिन का आर्तनाद मेरे दिल और दिमाग में भूचाल लाता है। आपने भी उड़ान भरने की तैयार कर ली है। हम पाण्डव अब किसके सहारे क्या करें पाण्डवों को निर्दोष बताते हुये पितामह युद्ध के कारणों पर कविवर दिनकर के शब्दों में प्रकाश डालते हुये कहते हैं :–

'महाभारत नहीं था द्वन्द्व केवल दो घरों का,
अनल का पुंज था इसमें भरा अगणित नरों का।
न केवल यह विस्फोट कुरूवंश के संघर्ष का था,
विकट विस्फोट सम्पूर्ण भारतवर्ष का था।'

पितामह युधिष्ठर से आंसुओं को सम्भाल कर एक जन सेवक बनकर जनता के आँसुओं पर सहानुभूति का मरहम लगाने की प्रेरणा देते हुये इस विध्वंस से पाण्डवों को मुक्त करते हुये युद्ध के कारणों पर प्रकाश डालते हुये कविवर दिनकर के शब्दों में कहते हैं :–

'कहीं था जल रहा कोई किसी की शूरता में,
कहीं था क्षोम में कोई किसी की क्रूरता में।
कहीं उत्कर्ष ही नृप का नृपों को शालता था,
कहीं प्रतिशोध का कोई भुजंगम पालता था।।'

महाभारत के भंयकर युद्ध के लिये समान रूप से सभी दोषी हैं। धृतराष्ट्र की अन्धी आँखों से शायद पुत्रमोह का पर्दा उठ सकता था यदि स्वयं गांधारी पतिव्रत धर्म निभाने के लिये आँखे होते हुये भी अन्धी न बनती। यदि वह धृतराष्ट्र की आँखे बनकर राजपाठ चलाने में सहायता करती तो दुर्योधन, शकुनि और कर्ण के अराजकता फैलाने के हौसले बुलन्द नहीं होते। गांधारी पितामह भीष्म, गुरू द्रोण से इस तिकड़ी के पंख काटने के आदेश राजा धृतराष्ट्र से लेकर उन्हें पंखहीन कर देती अथवा जेल की चार दीवारी में रोटी खाने को बाध्य कर देती। लेकिन दुर्भाग्य इस देश का कि राजा और रानी अन्ध परम्पराओं को छाती से लगाकर केवल बच्चों की फौज पैदा करने में ही लगे रहें। उन्हें संस्कारित और चरित्रवान बनाने में कोई भी अहं भूमिका निभा पाने में असमर्थ रहे। आँखें आर्य समाज के प्रवर्तक और महान् समाज सुधारक महर्षि स्वामी दयानन्द के गुरू दण्डी स्वामी विरजानन्द की भी नहीं थी। लेकिन होनहार शिष्य दयानन्द को अपना ज्ञान देकर उन्होंने गुरू दक्षिणा के रूप में लवंग (लौंग) स्वीकार करने के बजाये अपने प्रिय शिष्य का जीवन ही माँग लिया। प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द ने शिष्य दयानन्द से दक्षिणा के रूप में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करने, आर्ष ग्रन्थों को पढ़ने पढ़ाने और अन्धविश्वासों, पाखण्डों को चकनाचूर करने और मानव–मात्र का कल्याण करने हेतु घर–घर में वेद सन्देश पहुँचाने के लिये शिष्य का जीवन ही मांग लिया। आज्ञाकारी शिष्य ने भी गुरू चरण में शीश नवाकर गुरू आदेश का जीवन की अन्तिम सांस तक पालन किया मुसलमानों, फिरंगियों के जाल से देशवासियों को बचाकर अपना प्रण निभाया। लेकिन महाभारत में अन्धा धृतराष्ट्र एक राजा और पिता के रूप में असफल रहा।

अपने एक सौ पुत्रों के मारे जाने की पीड़ा के ताव को न झेल पाने के कारण गांधारी ने श्री कृष्ण को ही महाभारत के युद्ध तथा उसमें मारे गये उसके सौ पुत्रों का दोषी मानते हुये योगेश्वर कृष्ण से कहा, "यदि तुम चाहते तो युद्ध को टाला जा सकता था लेकिन हे माधव तुम कदम–कदम पर आग में घी डालते रहे और आज सौ पुत्रों की मां होते हुये भी मेरी गोद शून्य हो गई है। अतः मैं तुम्हें शाप देती हूँ जैसे मेरे पुत्र मार दिये गये वैसे ही तुम्हारा वंश आपस में लड़ते–लड़ते तुम्हारी आंखों के सामने एक दूसरे को काटकर समाप्त हो जाये। इससे पूर्व कि गांधारी अपनी गलतियों पर श्री कृष्ण से क्षमा याचना करती उसने धृतराष्ट्र की तरह पुत्रमोह में महाभारत के इस महान योद्धा और शान्ति के दूत को ही शाप दे दिया। यह इस देश का दुर्भाग्य

www.thearyasamaj.org

ही था कि दोनों राजा–रानी पुत्र वियोग में तड़पते तो रहे लेकिन उन्हें अपनी कमज़ोरियों का आभास नहीं हुआ। एक वर्ग ऐसा भी है जो युद्ध का दायित्व द्रौपदी पर डालता है। उनका मानना है यदि वह दुर्योधन के गिरने पर नहीं खिलखिलाती और यह न कहती कि अन्धे के पुत्र अन्धे ही होते हैं तो शायद दुर्योधन हिंसक न होता। सभी का अपना–अपना सोचना है। इधर युधिष्ठिर को क्लीनचिट देते हुये कविवर दिनकर के शब्दों में शरशैय्या पर लेटे भीष्म उसे अपने आँसुओं पर काबू पाने के लिये कहते है :–

न समझो युद्ध के होते दो ही प्रणेता,
समर के अग्रणी पराजित और जेता।
न जलता निखिल विश्व दो की आग से है,
अवस्थित ज्यों न जग दो चार ही के भाग से है।

योगेश्वर श्री कृष्ण की तो देव दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के ११ वें सुमुल्लास में लिखते हैं :–

देखो! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरूषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्य्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाये हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जादासी से समागम, परस्त्रियों से रासमण्डल, क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण जी में लगाये हैं। इसको पढ़–पढ़ा सुन–सुना के अन्य मत वाले श्रीकृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं।

'सत्यार्थ प्रकाश प्रश्नावली'

♦देवराज आर्य मित्र, WZ-428 हरीनगर, नई दिल्ली, ११००६४

सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो और निम्न प्रश्नों के उत्तर एक मास तक भेजो। सही उत्तर देने वाले को रोचक ज्ञानवर्धक पुस्तक भेजी जाएगी।

१. भूत–प्रेत क्या होते हैं ?
२. कौन–से वृक्ष का फल पीसकर जल में डालने से जल शुद्ध हो जाता है ?
३. सृष्टि के आदि में किन चार ऋषियों की आत्मा में वेदों का ज्ञान दिया ?
४. बीज पहले उत्पन्न हुआ या वृक्ष ?
५. मुर्गी पहले हुई या अण्डा ?
६. सृष्टि की आयु कितने वर्ष है ?
७. प्रथम मनुष्य की उत्पत्ति कहाँ हुई ?
८. दाढ़ी मूंछ रखनी चाहिए या नहीं ?
९. अगर और तगर में, जायफल और जावित्री में क्या अन्तर है ?
१०. क्या ईश्वर भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों को जानता है ?
११. मोक्ष (मुक्ति) की अवधि कितनी होती है ?

कृपया अपना नाम और पूरा पता साफ–साफ लिखें।

जीवन सन्देश

सदा सच बोल, पूरा तोल,
असली में नकली मत घोल।
क्यों हो अन्धा आंखें खोल,
बज रहा सिर पर मौत का ढ़ोल।
तज हेरा–फेरी व्यर्थ मत डोल,
जीवन हीरा है, अनमोल।
इसे माटी में मत रोल।

सभा समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी की बैठक सभा प्रधान श्री सत्यप्रकाश मेहन्दीरत्ता जी की अध्यक्षता में आर्य समाज सुन्दर नगर (खरीहड़ी) में सम्पन्न हुई। बैठक में निरन्तर वर्षा होते रहने के उपरान्त भी उपस्थिति उत्साह जनक थी। इस बैठक में ४० से अधिक प्रतिनिधियों में भाग लिया। प्रदेश में महर्षि दयानन्द पीठ की स्थापना होने पर उत्साहित आर्यजनों ने माल्यार्पण करके प्रदेश अध्यक्ष श्री सत्यप्रकाश मेहन्दीरत्ता का स्वागत और धन्यवाद व्यक्त किया। महर्षि दयानन्द चेयर की स्थापना हेतु दयानन्द मठ के संस्थापक और पूर्व सभा अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द जी के प्रयत्न स्तुत्य, श्लाघ्य और सराहनीय रहे हैं। समारोह में उपस्थित सभी सदस्यों को सभा प्रधान ने जानकारी दी कि अब हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में न केवल यह चेयर सक्रिय हो गई है अपुति इसके लिये यथेष्ठ बजट भी स्वीकृत कर दिया गया है। इस चेयर की स्थापना पर प्रदेश भर के आर्यजनों के स्वप्न साकार हो गये जिसके लिये प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री वीरभद्र सिंह का भी धन्यवाद व्यक्त किया गया। एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ कि हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता के सेनानी और महान समाज सुधारक धर्म धुरन्धर महर्षि दयानन्द की जयन्ती को हिमाचल सरकार राजपत्रित अवकाश घोषित करे तथा ऋषि दयानन्द के समाज सुधारों को लागू करे। इस अवसर पर आर्यसमाज कुल्लू, मण्डी, सुन्दरनगर कालौनी, सुन्दरनगर खरीहड़ी, हमीरपुर, नगरोटा बगवां, जोगिन्द्रनगर, डलहौजी से आर्य प्रतिनिधियों ने उपस्थिति दर्ज की। सभी ने आर्य समाज को मजबूत बनाने पर बल दिया। बैठक की समाप्ति के उपरान्त आर्य समाज खरीहड़ी के प्रधान श्रीमती महेन्द्री देवी की ओर से सभी उपस्थित सदस्यों को प्रीतिभोज कराया गया।

–सम्पादक

www.thearyasamaj.org

''कुमारिल भट्ट और ऋषि दयानन्द''

♦कुन्दनलाल आर्य, चूनियाँवाला

तकरीबन २३०० वर्ष हुए जब कि सारे भारतवर्ष में बुद्ध धर्म फैल चुका था। तमाम राजा महाराजा बुद्ध धर्म स्वीकार चुके थे। और बुद्ध धर्म के न मानने वालों पर तरह–तरह की सख्तियाँ की जा रही थीं। और मामूली अपराधों के बदले गैर बौद्धों को सख्त सजाएं दी जाती थीं, जिसमें आम जनता डर के मारे बौद्ध धर्म स्वीकार करती चली जा रही थी, कि कुमारिल भट्ट का जन्म हुआ। विद्या में निपुण होकर एक दिन वे कौशाम्बी के शहर में आये और गंगा–स्नान के लिए प्रातः ही गंगा तट पर पहुंच गये, तो किसी स्त्री की आवाज उनके कानों में पहुंची ''किं करोमि कुत्र गच्छामि को वेदानुद्धारिष्यति।'' क्या करूँ, कहाँ जाऊँ कौन वेदों की रक्षा करेगा ? कुमारिल भट्ट यह शब्द सुनकर खड़े हो गये, इधर–उधर देखा, कोई नज़र नहीं आया तो ऊँची आवाज़ में कहने लगे– ''ऐ देवी तू मत समझ कि तेरी आवाज़ नष्ट हो गई है। तेरी आवाज़ ने मुझे घोर निद्रा से जागृत कर दिया है और मैं अब जी जान से वैदिक धर्म का प्रचार करूँगा। उस दिन से कुमारिल भट्ट मैदान में निकल खड़े हुए और बौद्ध सिद्धान्तों की धज्जियाँ उड़ाने लगे। बौद्ध पण्डितों को जब कुमारिल भट्ट की इन सरगर्मियों का पता चला, तो उन्होंने महाराज हर्षवर्धन के पास उनकी शिकायत की, और कुमारिल भट्ट को गद्दार बना कर उनको संगीन सजा दने की मांग की। परन्तु महाराज हर्षवर्धन बड़े विद्वान् थे, उन्होंने बहुत विचार कर यह फैसला किया कि बात किसी शास्त्रार्थ के द्वारा ही तय होनी चाहिए। अतः महाराज की मन्शा के अनुकूल प्रयागराज में एक बहुत बड़े शास्त्रार्थ का आयोजन किया गया। यह शास्त्रार्थ महाराज हर्षवर्धन की अध्यक्षता में हुआ। एक तरफ कुमारिल भट्ट अकेले थे, और दूसरी तरफ बौद्ध भिक्षु बहुत बड़ी संख्या में थे। बौद्ध भिक्षुओं ने बड़ा शोर गुल मचा दिया और कुमारिल भट्ट की एक न चलने दी। उसकी दलीलों को हंसी मजाक में उड़ा कर उसको शर्मिन्दा करते रहे। और अन्त में बौद्ध लोगों ने महाराज हर्षवर्धन की मौजूदगी में कुमारिल भट्ट की पराजय की घोषणा कर दी। जिसका कुमारिल भट्ट ने अपना बहुत बड़ा अपमान समझा और इस अपमान के कारण demoralise हो गया, और इस नित्य प्रति की अपकीर्ति से बचने के लिए दीवाली के रोज चिता बनाकर ओं नाम का जाप करते हुए भस्म हो गये। अचानक उसी दिन स्वामी शंकराचार्य मौके पर पहुंच गये, और उन्होंने कुमारिल भट्ट को आत्म हत्या करने को मना भी किया परन्तु कुमारिल भट्ट न माने, उन्होंने शंकर स्वामी से केवल यही कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि मेरे बाद बौद्धों के पाखण्ड को समाप्त करने वाला कोई मनुष्य बाकी है। जहाँ मुझे इस बात पर प्रसन्नता है, वहाँ मुझे इस बात का दुःख भी है कि हमारे प्राचीन शास्त्रों में इस कदर मिलावट कर दी गई है कि झूठ और सत्य के मध्य अन्तर ही नहीं रहा। और इसके कारण सारे देश में फूट ही फूट है। हर कोई अपना डेढ़ ईंट का मन्दिर अलग बनाने में लगा हुआ है, इसलिए जब तक सारे देश में जागृति नहीं आती और ईश्वर विश्वास पैदा नहीं होता देश का भाग्य कदापि बदल नहीं सकता। मैंने लोगों को वैदिक धर्म का रास्ता दिखलाने का प्रयत्न किया, मगर अफसोस कि लोगों ने मुझे मिलवर्तन न दिया और यही उत्तम समझता हूँ कि नित्य प्रति की अपकीर्ति से मुक्ति प्राप्त करने के लिए स्वयं को समाप्त कर दूं। ताकि नित्य प्रति की परेशानी जाती रहे, यह कुमारिल के अन्तिम शब्द थे जो मायूसी की हालत में आत्म हत्या करते समय शंकर स्वामी से कहे थे। और कुमारिल भट्ट की तरह महर्षि दयानन्द जी को भी यह ज्ञान हो गया था कि हमारे प्राचीन शास्त्रों में इस कदर मिलावट हो चुकी है कि सत्य झूठ की पहचान ही नहीं हो सकती। और वह भी इसी परिणाम पर पहुंचे थे, कि इसी मिलावट के काण देश में फूट पड़ी हुई थी। अतः उन्होंने एक ऐसा सिद्धान्त कायम कर लिया जिसमें सत्य तथा झूठ की आसानी से परख हो सके, उन्होंने घोषणा कर दी वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। और वेद ही स्वतः प्रमाण है। वेदानुकूल होने से ही अन्य शास्त्रों का प्रमाण है, जहाँ और जिस स्थान पर उनमें वेद के प्रतिकूल कोई श्लोक या बात है वह प्रमाणित नहीं है। इसी सिद्धान्त की बिना पर उन्होंने दिग्विजय प्राप्त की। किसी को उनके सामने ठहरने की हिम्मत न हुई। और यह बात काशी शास्त्रार्थ सिद्ध हो गई कि जब काशी के राजा ने काशी के पण्डितों को कहा कि एक दण्डी संन्यासी आए हैं, और वे मूर्तिपूजा का खण्डन करते हैं। और आपसे शास्त्रार्थ करना चाहते हैं तो सब पण्डितों ने एक जबां होकर राजा को कहा कि वे तो वेद को ही स्वतः प्रमाण मानते हैं, और हमने वेद को देखा ही नहीं तो राजा बड़ा हैरान होकर उनसे कहने लगा कि फिर इतनी देर आप लोग हमें धोखे में ही रखते रहे कि मूर्तिपूजा वेदानुकूल है। तब राजा ने कहा कि शास्त्रार्थ तो अवश्य होना चाहिए और जिस तरह भी हो उसको शिकस्त देनी चाहिए तो पण्डितों ने कहा कि हम को १५ दिन की मोहलत मिल जाय तो हम वेद को कुछ कुछ देख तो लें।

www.thearyasamaj.org

ही था कि दोनों राजा–रानी पुत्र वियोग में तड़पते तो रहे लेकिन उन्हें अपनी कमज़ोरियों का आभास नहीं हुआ। एक वर्ग ऐसा भी है जो युद्ध का दायित्व द्रौपदी पर डालता है। उनका मानना है यदि वह दुर्योधन के गिरने पर नहीं खिलखिलाती और यह न कहती कि अन्धे के पुत्र अन्धे ही होते हैं तो शायद दुर्योधन हिंसक न होता। सभी का अपना–अपना सोचना है। इधर युधिष्ठिर को क्लीनचिट देते हुये कविवर दिनकर के शब्दों में शरशैय्या पर लेटे भीष्म उसे अपने आँसुओं पर काबू पाने के लिये कहते है :–

न समझो युद्ध के होते दो ही प्रणेता,
समर के अग्रणी पराजित और जेता।
न जलता निखिल विश्व दो की आग से है,
अवस्थित ज्यों न जग दो चार ही के भाग से है।

योगेश्वर श्री कृष्ण की तो देव दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के ११ वें सुमुल्लास में लिखते हैं :–

देखो! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरूषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्य्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाये हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जादासी से समागम, परस्त्रियों से रासमण्डल, क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण जी में लगाये हैं। इसको पढ़–पढ़ा सुन–सुना के अन्य मत वाले श्रीकृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं।

'सत्यार्थ प्रकाश प्रश्नावली'

♦देवराज आर्य मित्र, WZ-428 हरीनगर, नई दिल्ली, ११००६४

सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो और निम्न प्रश्नों के उत्तर एक मास तक भेजो। सही उत्तर देने वाले को रोचक ज्ञानवर्धक पुस्तक भेजी जाएगी।

१. भूत–प्रेत क्या होते हैं ?
२. कौन–से वृक्ष का फल पीसकर जल में डालने से जल शुद्ध हो जाता है ?
३. सृष्टि के आदि में किन चार ऋषियों की आत्मा में वेदों का ज्ञान दिया ?
४. बीज पहले उत्पन्न हुआ या वृक्ष ?
५. मुर्गी पहले हुई या अण्डा ?
६. सृष्टि की आयु कितने वर्ष है ?
७. प्रथम मनुष्य की उत्पत्ति कहाँ हुई ?
८. दाढ़ी मूंछ रखनी चाहिए या नहीं ?
९. अगर और तगर में, जायफल और जावित्री में क्या अन्तर है ?
१०. क्या ईश्वर भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों को जानता है ?
११. मोक्ष (मुक्ति) की अवधि कितनी होती है ?

कृपया अपना नाम और पूरा पता साफ–साफ लिखें।

जीवन सन्देश

सदा सच बोल, पूरा तोल,
असली में नकली मत घोल।
क्यों हो अन्धा आंखें खोल,
बज रहा सिर पर मौत का ढ़ोल।
तज हेरा–फेरी व्यर्थ मत डोल,
जीवन हीरा है, अनमोल।
इसे माटी में मत रोल।

सभा समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी की बैठक सभा प्रधान श्री सत्यप्रकाश मेहन्दीरत्ता जी की अध्यक्षता में आर्य समाज सुन्दर नगर (खरीहड़ी) में सम्पन्न हुई। बैठक में निरन्तर वर्षा होते रहने के उपरान्त भी उपस्थिति उत्साह जनक थी। इस बैठक में ४० से अधिक प्रतिनिधियों में भाग लिया। प्रदेश में महर्षि दयानन्द पीठ की स्थापना होने पर उत्साहित आर्यजनों ने माल्यार्पण करके प्रदेश अध्यक्ष श्री सत्यप्रकाश मेहन्दीरत्ता का स्वागत और धन्यवाद व्यक्त किया। महर्षि दयानन्द चेयर की स्थापना हेतु दयानन्द मठ के संस्थापक और पूर्व सभा अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द जी के प्रयत्न स्तुत्य, श्लाध्य और सराहनीय रहे हैं। समारोह में उपस्थित सभी सदस्यों को सभा प्रधान ने जानकारी दी कि अब हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में न केवल यह चेयर सक्रिय हो गई है अपुति इसके लिये यथेष्ठ बजट भी स्वीकृत कर दिया गया है। इस चेयर की स्थापना पर प्रदेश भर के आर्यजनों के स्वप्न साकार हो गये जिसके लिये प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री वीरभद्र सिंह का भी धन्यवाद व्यक्त किया गया। एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ कि हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता के सेनानी और महान समाज सुधारक धर्म धुरन्धर महर्षि दयानन्द की जयन्ती को हिमाचल सरकार राजपत्रित अवकाश घोषित करे तथा ऋषि दयानन्द के समाज सुधारों को लागू करे। इस अवसर पर आर्यसमाज कुल्लू, मण्डी, सुन्दरनगर कालौनी, सुन्दरनगर खरीहड़ी, हमीरपुर, नगरोटा बगवां, जोगिन्द्रनगर, डलहौजी से आर्य प्रतिनिधियों ने उपस्थिति दर्ज की। सभी ने आर्य समाज को मजबूत बनाने पर बल दिया। बैठक की समाप्ति के उपरान्त आर्य समाज खरीहड़ी के प्रधान श्रीमती महेन्द्री देवी की ओर से सभी उपस्थित सदस्यों को प्रीतिभोज कराया गया।

–सम्पादक

www.thearyasamaj.org

''कुमारिल भट्ट और ऋषि दयानन्द''

♦कुन्दनलाल आर्य, चूनियाँवाला

तकरीबन २३०० वर्ष हुए जब कि सारे भारतवर्ष में बुद्ध धर्म फैल चुका था। तमाम राजा महाराजा बुद्ध धर्म स्वीकार चुके थे। और बुद्ध धर्म के न मानने वालों पर तरह–तरह की सख्तियाँ की जा रही थीं। और मामूली अपराधों के बदले गैर बौद्धों को सख्त सजाएं दी जाती थीं, जिसमें आम जनता डर के मारे बौद्ध धर्म स्वीकार करती चली जा रही थी, कि कुमारिल भट्ट का जन्म हुआ। विद्या में निपुण होकर एक दिन वे कौशाम्बी के शहर में आये और गंगा–स्नान के लिए प्रातः ही गंगा तट पर पहुंच गये, तो किसी स्त्री की आवाज उनके कानों में पहुंची ''किं करोमि कुत्र गच्छामि को वेदानुद्धारिष्यति।'' क्या करूँ, कहाँ जाऊँ कौन वेदों की रक्षा करेगा ? कुमारिल भट्ट यह शब्द सुनकर खड़े हो गये, इधर–उधर देखा, कोई नज़र नहीं आया तो ऊँची आवाज़ में कहने लगे– ''ऐ देवी तू मत समझ कि तेरी आवाज़ नष्ट हो गई है। तेरी आवाज़ ने मुझे घोर निद्रा से जागृत कर दिया है और मैं अब जी जान से वैदिक धर्म का प्रचार करूँगा। उस दिन से कुमारिल भट्ट मैदान में निकल खड़े हुए और बौद्ध सिद्धान्तों की धज्जियाँ उड़ाने लगे। बौद्ध पण्डितों को जब कुमारिल भट्ट की इन सरगर्मियों का पता चला, तो उन्होंने महाराज हर्षवर्धन के पास उनकी शिकायत की, और कुमारिल भट्ट को गद्दार बना कर उनको संगीन सजा दने की मांग की। परन्तु महाराज हर्षवर्धन बड़े विद्वान् थे, उन्होंने बहुत विचार कर यह फैसला किया कि बात किसी शास्त्रार्थ के द्वारा ही तय होनी चाहिए। अतः महाराज की मन्शा के अनुकूल प्रयागराज में एक बहुत बड़े शास्त्रार्थ का आयोजन किया गया। यह शास्त्रार्थ महाराज हर्षवर्धन की अध्यक्षता में हुआ। एक तरफ कुमारिल भट्ट अकेले थे, और दूसरी तरफ बौद्ध भिक्षु बहुत बड़ी संख्या में थे। बौद्ध भिक्षुओं ने बड़ा शोर गुल मचा दिया और कुमारिल भट्ट की एक न चलने दी। उसकी दलीलों को हंसी मजाक में उड़ा कर उसको शर्मिन्दा करते रहे। और अन्त में बौद्ध लोगों ने महाराज हर्षवर्धन की मौजूदगी में कुमारिल भट्ट की पराजय की घोषणा कर दी। जिसका कुमारिल भट्ट ने अपना बहुत बड़ा अपमान समझा और इस अपमान के कारण demoralise हो गया, और इस नित्य प्रति की अपकीर्ति से बचने के लिए दीवाली के रोज चिता बनाकर ओं नाम का जाप करते हुए भस्म हो गये। अचानक उसी दिन स्वामी शंकराचार्य मौके पर पहुंच गये, और उन्होंने कुमारिल भट्ट को आत्म हत्या करने को मना भी किया परन्तु कुमारिल भट्ट न माने, उन्होंने शंकर स्वामी से केवल यही कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि मेरे बाद बौद्धों के पाखण्ड को समाप्त करने वाला कोई मनुष्य बाकी है। जहाँ मुझे इस बात पर प्रसन्नता है, वहाँ मुझे इस बात का दुःख भी है कि हमारे प्राचीन शास्त्रों में इस कदर मिलावट कर दी गई है कि झूठ और सत्य के मध्य अन्तर ही नहीं रहा। और इसके कारण सारे देश में फूट ही फूट है। हर कोई अपना डेढ़ ईंट का मन्दिर अलग बनाने में लगा हुआ है, इसलिए जब तक सारे देश में जागृति नहीं आती और ईश्वर विश्वास पैदा नहीं होता देश का भाग्य कदापि बदल नहीं सकता। मैंने लोगों को वैदिक धर्म का रास्ता दिखलाने का प्रयत्न किया, मगर अफसोस कि लोगों ने मुझे मिलवर्तन न दिया और यही उत्तम समझता हूँ कि नित्य प्रति की अपकीर्ति से मुक्ति प्राप्त करने के लिए स्वयं को समाप्त कर दूं। ताकि नित्य प्रति की परेशानी जाती रहे, यह कुमारिल के अन्तिम शब्द थे जो मायूसी की हालत में आत्म हत्या करते समय शंकर स्वामी से कहे थे। और कुमारिल भट्ट की तरह महर्षि दयानन्द जी को भी यह ज्ञान हो गया था कि हमारे प्राचीन शास्त्रों में इस कदर मिलावट हो चुकी है कि सत्य झूठ की पहचान ही नहीं हो सकती। और वह भी इसी परिणाम पर पहुंचे थे, कि इसी मिलावट के काण देश में फूट पड़ी हुई थी। अतः उन्होंने एक ऐसा सिद्धान्त कायम कर लिया जिसमें सत्य तथा झूठ की आसानी से परख हो सके, उन्होंने घोषणा कर दी वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। और वेद ही स्वतः प्रमाण है। वेदानुकूल होने से ही अन्य शास्त्रों का प्रमाण है, जहाँ और जिस स्थान पर उनमें वेद के प्रतिकूल कोई श्लोक या बात है वह प्रमाणित नहीं है। इसी सिद्धान्त की बिना पर उन्होंने दिग्विजय प्राप्त की। किसी को उनके सामने ठहरने की हिम्मत न हुई। और यह बात काशी शास्त्रार्थ सिद्ध हो गई कि जब काशी के राजा ने काशी के पण्डितों को कहा कि एक दण्डी संन्यासी आए हैं, और वे मूर्तिपूजा का खण्डन करते हैं। और आपसे शास्त्रार्थ करना चाहते हैं तो सब पण्डितों ने एक जबां होकर राजा को कहा कि वे तो वेद को ही स्वतः प्रमाण मानते हैं, और हमने वेद को देखा ही नहीं तो राजा बड़ा हैरान होकर उनसे कहने लगा कि फिर इतनी देर आप लोग हमें धोखे में ही रखते रहे कि मूर्तिपूजा वेदानुकूल है। तब राजा ने कहा कि शास्त्रार्थ तो अवश्य होना चाहिए और जिस तरह भी हो उसको शिकस्त देनी चाहिए तो पण्डितों ने कहा कि हम को १५ दिन की मोहलत मिल जाय तो हम वेद को कुछ कुछ देख तो लें।

www.thearyasamaj.org

महाराज ने महर्षि दयानन्द को कहा कि शास्त्रार्थ १५ दिन के बाद हो, परन्तु अवश्य हो। महाराज ने कहा अवश्य होगा। और फिर १५ दिन काशी के सब बड़े–बड़े पण्डितों ने खूब तैयारी की। उधर लंगोट बन्द संन्यासी, और इधर सारी काशी के समृद्ध पण्डित। अतः १६ नवम्बर १८६६ मंगलवार सांय चार बजे शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ। महाराजा हर्षवर्धन की भांति महाराजा काशी इसके प्रधान बने, अनुमान से ५०००० मनुष्यों की हाजरी में शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ, और काशी के सभी प्रसिद्ध पण्डित जिनमें स्वामी विशुद्धानन्द, बालशास्त्री, ताराचरण राजपण्डित, प. शिवसहाय, माधवाचार्य आदि प्रमुख थे, अकेले लंगोट बन्द दयानन्द के सामने आए और दयानन्द के एक एक प्रश्न से निरुत्तर होकर बैठते गये, परन्तु महाराज काशी और सब पण्डित येन केन प्रकारेण स्वामी दयानन्द की पराजय की घोषणा करना चाहते थे। इसलिए जब शास्त्रार्थ करते शाम के सात बज गये, और काफी अन्धेरा हो गया तो काशी के पण्डितों ने एक फटा पुराना पत्रा स्वामी जी के सम्मुख रख कर कहा कि इस में पुराण की आज्ञा है। गोया अपने मुंह से मूर्तिपूजा को न सिद्ध कर सकने का इकबाल करके अब पुराण की तरफ आये। और जब स्वामी जी अभी वह पत्रा धीमी लालटेन की रोशनी में देखने ही लगे थे, कि स्वामी विशुद्धानन्द और महाराज काशी उठकर खड़े हो गये, और ताली बजा दी कि दयानन्द हार गये, बस फिर क्या था इतनी बड़ी भीड़ में काशी के पण्डित नहीं, बल्कि पण्डितों के पालतू गुण्डे भी मौजूद थे, सब ने स्वामी जी पर ईंट, पत्थर, गोबर जूते फेंकने शुरु कर दिये, और भरपूर अपमान करने लगे, परन्तु कोतवाल जगन्नाथ ने महर्षि के सामने खड़ा होकर उनको बचा लिया, वरना पण्डित और गुण्डे तो उनको ठिकाने लगाने की साजिश करके ही आए थे। कुमारिल भट्ट की तरह ऋषि दयानन्द जी को इस शास्त्रार्थ में घोर अपमान सहन करना पड़ा, परन्तु महर्षि कुमारिल भट्ट की तरह Demoralise न हुए। और इस दिलशकनी और बदनामी के कारण न सिर्फ यह कि कुमारिल भट्ट की तरह आत्महत्या को न तैयार हुए बल्कि इस शास्त्रार्थ के बाद पूरे चार महीने उस काशी नगरी में रहकर लगातार जोरदार खण्डन मूर्तिपूजा का करते रहे। और बार–बार पण्डितों को शास्त्रार्थ के लिए ललकारते रहे, परन्तु किसी भी पण्डित के अन्दर महर्षि के सामने आने की हिम्मत न हुई। स्वामी जी ने अपने इस घोर अपमान को अपमान न समझा था। फिर भी स्वामी जी काशी में इसके बाद छः बार आये। और हर समय पण्डितों को न सिर्फ जबानी बल्कि विज्ञापनों द्वारा जो उनके द्वारों पर लगा दिये जाते थे शास्त्रार्थ के लिए आह्वान करते रहे परन्तु जब तक महर्षि जीते रहे किसी भी पण्डित की जुर्रत न हुई कि उनके सामने बात भी कर सके। जिस अपमान को सहन न करके बदनामी को सहन न करके बदनामी के भय से कुमारिल भट्ट ने दीवाली के दिन चिता बनाकर आत्महत्या कर ली। उसी अपमान बल्कि उससे भी अधिक अपमानों को सहन करते हुए महर्षि सारे भारतवर्ष में घूम घूम कर वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे, और सन् १८८३ में दीवाली के दिन ही, "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो, तैने अच्छी लीला की" और ओ३म् का जाप करते हुए प्राण त्याग दिये (बलिदान दे दिया)। अगर महर्षि भी कुमारिल भट्ट की तरह अपमान को सहन न कर पाते और आत्म हत्या कर लेते तो इतने महान् कार्य जो महर्षि ने इस शास्त्रार्थ के बाद करके देश के अन्दर जागृति पैदा की और प्राचीन ग्रन्थों के अन्दर मिलावटों को देखकर जो यह सिद्धान्त सिद्ध किया कि वेद स्वतः प्रमाण हैं, कायम करके देश में एकता की लहर पैदा कर दी, यह कैसे हो सकता था। वैदिक धर्म का उद्धार करने का यत्न कुमारिल भट्ट ने भी किया, और महर्षि दयानन्द जी ने भी परन्तु कुमारिल भट्ट अपमान न सहन कर असफल हुए। और महर्षि अपमान सहन कर अपने मिशन में पूरी तरह सफलता प्राप्त कर पाये। शायर के शब्दों में इस प्रकार है :

पैगाम वेद पाक दे के, खासो आम को।
दुनिया से भी गये तो दिवाली की शाम को।।

(पूर्ण पुरुष का विचित्र जीवन 'से साभार')

"बधाई"

शिक्षक दिवस ५ सितम्बर, २०१३ को डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल हमीरपुर के प्रधानाचार्य श्री पी. सी. वर्मा को सी. बी. एस. ई. शिक्षक पुरस्कार से इंडिया इंटरनेशनल सेंटर दिल्ली स्थित सी. डी. देशमुख सभागार में यह पुरस्कार डॉ. पल्लम राजू ने प्रदान किया। मानव संसाधन विकास राज्य मन्त्री डॉ. शशि थरूर तथा मानव संसाधन विकास राज्य मन्त्री जितिन प्रसाद भी सभागार में विशेष रुप से उपस्थित थे। प्रतिवर्ष सी. बी. एस. ई. की ओर से देश भर से शिक्षकों को उन के शिक्षा में योगदान के आधार पर सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों को सम्मानित किया जाता है। श्री पी. सी. वर्मा को २५ हज़ार रूपऐ की राशि, प्रशस्ति–पत्र तथा शाल भेंट कर सम्मानित किया। हिमाचल पैंशनर कल्याण संघ जिला मण्डी एवं आर्य वन्दना परिवार की ओर से वर्मा जी को हार्दिक बधाई।

–सम्पादक

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज कालका के साप्ताहिक सत्संग में दिया गया व्याख्यान

''सन्ध्या विधि अपनाओ-बाबों से अपने को बचाओ''

♦योग प्रकाश नन्दा, संगठन मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा (हि० प्र०)

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानव जाति पर इतना उपकार किया है कि यदि उनके बताये मार्ग पर चला जाये तो इधर–उधर भटकने की आवश्यकता ही नहीं है और न ही तथा कथित बाबाओं से ठगे जाने का डर। महर्षि द्वारा रचित पुस्तकों में इतना ज्ञान भरा है जो मनुष्य जीवन के लिए पर्याप्त है। महर्षि द्वारा रचित सन्ध्या–उपासना विधि अत्यन्त महत्वपूर्ण है तथा उसे इस तरह क्रमबद्ध किया है कि थोड़ा सा भी चिन्तन करें तो जीवन की राह आसान हो जाती है। सर्व प्रथम गायत्री मन्त्र द्वारा ईश्वर के कार्यों का गुणगान किया जाता है उसकी सर्व व्यापकता का व्याख्यान किया जाता है फिर बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चलाने का आहवान् किया जाता है। इसके उपरान्त जल से आन्तरिक और बाहरी शुद्धि की जाती है फिर ईश्वर का गुणगान किया जाता है। पुनः ईश्वर से प्रार्थना की जाती है कि मेरी पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, नीचे व ऊपर की छः दिशाओं में समस्त रूप से रक्षा कीजिए। भौतिक, आध्यात्मिक व दैविक प्रकोपों से रक्षा करें। इसके उपरान्त जब हर तरफ से भय मुक्त हो जाते हैं तो ईश्वर की अदृश्य शक्ति की निकटता का एहसास किया जाता है तथा ईश्वर से प्रार्थना की जाती है कि मैं शतायु होऊं तथा सौ वर्ष तक पूर्ण रूप से स्वस्थ रहूं, किसी पर निर्भर न रहूं तथा परोपकार के कार्य करता रहूं। इसके उपरान्त पुनः गायत्री मन्त्र पढ़ करके उसका गुणगान करके अपने आपको ईश्वर के आगे समर्पित करके प्रार्थना की जाती है कि मेरे दुःखों को आप ही दूर कर सकते हैं। आपकी शरण में ही आनन्द का वास है अतः मैं इसी तरह आपका जप, ध्यान, उपासना करता रहूं और आप मुझे अपनी शरण में लेकर मुझे धर्म–अर्थ, काम व मोक्ष प्राप्त कराएं और अन्त में ईश्वर को नमस्कार–नमन किया जाता है।

इतनी सरल विधि न अपना कर हम तथा कथित बाबाओं जो स्वयं को भगवान समझते हैं, अज्ञानता के कारण उनके चंगुल में फंस जाते हैं। आस्था के नाम पर फंसते चले जाते हैं। बुद्धि का उपयोग छोड़ कर अन्धविश्वासी बन जाते हैं फिर लोभ कह लो, भय कह लो या फिर भेड़चाल कह लो या दूसरों से पीछे न रहने की भावना कह लो हम लोग ऐसे बाबाओं के आश्रमों में उनके निजि कक्षों में जाने पर अपने को धन्य समझने लगते हैं। तथा कथित बाबा लोग एकान्त पाकर ऐसा कुकृत्य कर देते हैं जिससे मानवता भी शर्मशार हो जाती हैं। ऐसे आरोप आए दिन अखबारों व दूरदर्शन पर सुनने को मिलते हैं लेकिन हम फिर भी चिन्तन नहीं करते भला ऐसे स्थानों पर जाना ही क्यों? किसी भी बाबा की कृपा से ईश्वर की व्यवस्था नहीं बदल सकती। ईश्वर तो कर्म के आधार पर ही फल देते हैं।

स्थापना दिवस

सीनियर सिटिजन होम सुन्दरनगर देहरी के वृद्ध आश्रम में १३ वाँ स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर श्री सोहनलाल माननीय मुख्य संसदीय सचिव मुख्य अतिथि थे। सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता तथा इस आश्रम के संस्थापक पं. मनोहर लाल, पूर्व प्रधान श्री वी. वी. कौशल सुपुत्र स्वर्गीय लाला विशन दास, पद्म चन्द गौड़ पूर्व अध्यक्ष (वृद्धाश्रम) आदि अनेकों विभूतियों ने इस सुनहरी अवसर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। डैहर अनाथालय के अध्यक्ष श्री सत्यप्रकाश शर्मा, पैंशनर कल्याण संघ के संरक्षक और जिला मण्डी के प्रधान कृष्ण चन्द आर्य ने भी अपने विचार रखे तथा मानव सेवा को ही मानवता का सच्चा धर्म बताया। सुप्रसिद्ध अधिवक्ता सर्वोच्च न्यायालय और इस आश्रम के संस्थापक पं. मनोहर लाल जी ने वर्तमान प्रधान डॉ. पद्म सिंह गुलेरिया जी के प्रयासों की सराहना करते हुये कहा कि डॉ. गुलेरिया करूणा और सज्जनता की मूर्ति हैं। सभी को विश्वास में लेकर इस आश्रम को चार–चांद लगा रहे हैं। एक समय आयेगा जब यह आश्रम इतनी उन्नति करेगा कि इसकी ख्याति चारों ओर फैलेगी। सभी वृद्ध यहां आने के लिये आतुर होंगे। पं. मनोहर लाल शर्मा संस्थापक वृद्ध आश्रम सुन्दरनगर ने आगे कहा कि मैं यहाँ पधारे माननीय मुख्य संसदीय सचिव से अनुरोध करूंगा कि इस आश्रम की अधिकाधिक सहायता करें। स्मरण रहे पं. मनोहर लाल जी ने सरकाघाट, चच्योट, मनाली, मण्डी सदर में भी दीन–दुःखियों के लिये आश्रम खोलकर परोपकार के पुनीत कार्य किये हैं। मुख्य अतिथि श्री सोहन लाल ठाकुर ने जहां ढाई लाख रूपये की राशि निर्माण कार्य हेतु देने की घोषणा की वहां अपनी ओर से दस हजार की और अपनी एच्छिक निधि से ५ हज़ार रुपये देने की भी घोषणा की। अपनी घोषित राशि उन्होंने माननीय संस्थापक को तत्काल जनता की उपस्थिति में करतल ध्वनि के बीच में सौंपी। उन्होंने इस आश्रम को भविष्य में भी अधिकाधिक सहयोग करने का अश्वासन दिया।

–कृष्ण चन्द

www.thearyasamaj.org

आर्यों का तीर्थ धाम–दयानंद मठ दीनानगर

स्वामी स्वतन्त्रानन्द एवं उनके ख्याति प्राप्त १०५ वर्षीय शिष्य स्वामी सर्वानन्द और उनके शिष्य स्वामी सदानन्द जी की कर्मस्थली दयानन्द मठ दीनानगर की हीरक जयन्ती समारोह १८, १६ एवं २० अक्तूबर २०१३ को मठ परिसर में धूमधाम से मनाया जा रहा है। स्वामी सदानन्द जी महाराज ने स्वयं हिमाचल प्रदेश में कुल्लू, सुन्दरनगर कालौनी, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज खरीहड़ी, सरकाघाट, चोलथरा, कांगड़ा, नगरोटा बगवां आदि हिमाचल के अनेक स्थानों में स्वयं पहुंच कर उपरोक्त हीरक जयन्ती समारोह में पधार कर विद्वानों के प्रवचन एवं भजन सुनकर तथा स्वयं दयानन्द मठ की गतिविधियों को देख कर पुण्य प्राप्त करने की प्रेरणा दी है। इसी मठ में स्वामी सुमेधानन्द जी ने स्वामी सर्वानन्द जी से शिक्षा प्राप्त की और उन्हीं की प्रेरणा से दयानन्द मठ चम्बा की स्थापना की। अतः हिमाचल प्रदेश से अधिकाधिक आर्य बन्धु आर्यों की पवित्र तीर्थ स्थली दयानन्द मठ दीननगर की हीरक जयन्ती में १८ अक्तूबर से २० अक्तूबर तक पधार पुण्य प्राप्त करें।

–सम्पादक

आर्य समाज हमीरपुर का वार्षिक उत्सव

"दिनांक ८ नवम्बर से १० नवम्बर २०१३ तक"

कार्यक्रम

८ नवम्बर २०१३, शुक्रवार

प्रातः हवन यज्ञ, भजन, प्रवचन.....८.०० से १०.०० बजे तक
ध्वजा रोहण.....१०.०० से १०.३० बजे तक
शोभा यात्रा.....१०.०० बजे (डी. ए. वी. स्कूल हमीरपुर)
सांय कालीन भजन, प्रवचन.....७.३० से ६.३० बजे तक

९ नवम्बर २०१३, शनिवार

प्रातः हवन यज्ञ, भजन, प्रवचन.....८.०० से १०.०० बजे तक
दोपहर भजन, प्रवचन.....१.०० से ५.०० बजे तक
सांय कालीन.....७.३० से ६.३० बजे तक

१० नवम्बर २०१३, रविवार

प्रातः हवन यज्ञ, भजन, प्रवचन.....८.०० से १.०० बजे तक
ऋषि लंगर.....अपराह्न १.०० बजे से

इस समारोह में आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती जी महाराज वैदिक प्रवक्ता श्री बिरेन्द्र शास्त्री जी सहारनपुर, भजनोपदेशक श्री कुलदीप सिंह विद्यार्थी बिजनौर एवं हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध भजनोंपदेशक श्री बीरी सिंह आर्य अपने उपदेश और मधुर संगीत की अमृत वर्षा करेंगे।

–बीरी सिंह आर्य, मन्त्री आ. स. हमीरपुर

नारी का करो सम्मान

सरला गौड

•जो नारियों को इतना उच्च सम्मान देते हैं, जिस परिवार में, समाज में नारी का सम्मान होता है, वे परिवार दिव्य लाभ प्राप्त करते हैं।

•जिस परिवार में माता, पिता, बहन, बेटी, स्त्री के रूप में जो भी बिराजमान है, उनका आदर नहीं होता, उनके घर में सुख, शांति मिट जाती है। उनके परिवार अच्छे संस्कार नहीं पाते।

•नारी गौरव है, नारी महत्व है, नारी सम्मान है, नारियां तो गृह शोभा हैं। घर के भाग्य का उदय करती हैं। गृह ज्योति हैं। घर में लक्ष्मी और स्त्री में कोई अंतर नहीं है।

•नारी पूजा के योग्य है, घर की ज्योति है।

•नारी घर में होती है, प्रसन्नता से प्रकाशित होती है। स्त्री, लक्ष्मी में कोई अंतर नहीं है, कोई भेद नहीं है।

•घर में कन्या लक्ष्मी के समान होती है।

•कन्या, स्त्री, लक्ष्मी एक है।

•अंग्रेजी सभ्यता के लोग Ladies First, महिलाओं को आदर देना अच्छी बात है।

–सरला गौड, सचिव, आर्य समाज खरीहड़ी, सुन्दरनगर

महिलाओं पर अत्याचार क्यों ?

♦कृष्ण मोहन गोयल, ११३, बाजार कोट, अमरोहा

देहली में महिलाओं पर अत्याचार की घटनाएं दिन–प्रतिदिन बढ़ रही हैं। क्यों ? क्या इन सब के लिए समाज का उत्तरदायित्व नहीं है ? परिवार छिन्न–भिन्न हो रहे हैं। माँ–बाप की अबहेलना हो रही है। संस्कार लुप्त हो रहे हैं क्योंकि हम उन्मुक्त होने में विश्वास रखते हैं। समाचार पत्रों के अनुसार देहली के प्रत्येक बाजार में मदिरा और मांस की दुकानें तेजी से खुल रही हैं। क्या यह सभ्य समाज का परिचायक है। परिवारों में अब बिखराव आ रहा है। हमारी भारतीय सभ्यता, संस्कृति, भाषा, शिक्षा, खान–पान सब लुप्त हो रहा है। देर रात तक बाजारों की रौनक कायम रहती है। अधिकांश टी. वी. सीरियल उन्मुक्त जीवन शैली को ज्यादा प्रोत्साहन देते हैं। खेद तो यह है कि टी. वी. के यह कार्यक्रम हम परिवार के साथ बैठकर नहीं देख पाते।

धार्मिक आस्थाएं और अनुपालन केवल औपचारिकता है। आर्य समाज के नियम और आस्थाएं अब परिवार से लुप्त होती जा रही हैं। युवा पीढ़ी आर्य समाज में विश्वास नहीं रखती ? क्यों ?

साभार : आर्य जगत्

www.thearyasamaj.org

शोक समाचार

•चुरढ़ ग्राम के ४० वर्षीय श्री कृष्ण सिंह सुपुत्र श्री संत राम वर्मा पूर्व एन. डी. एस. आई. का अचानक हृदय गति रूक जाने से देहान्त हो गया। इस अचानक मृत्यु से चुरढ़ ग्राम में शोक की लहर दौड़ गई है। सुन्दरनगर के पैंशनर कल्याण संघ एवं आर्य वन्दना परिवार द्वारा दिवंगत आत्मा की शान्ति और सद्गति के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई। ईश्वर दुःख की इस बेला पर श्री संतराम वर्मा तथा उनके परिवार को इस दारूण दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करें।

•स्वतन्त्रता सेनानी श्री हेत राम शर्मा चल बसे : सुन्दरनगर के स्वतन्त्रता सेनानी श्री हेत राम शर्मा जी का अचानक देहान्त हो गया। श्री हेत राम शर्मा डढयाहल मुहल्ला में रहते थे। श्री जोगेश्वर शर्मा, पूर्व व्यायाम अध्यापक, निवासी जरल जो सादगी, प्रेम और मिलनसारी की जीवित मूर्ति थे, इस दुनिया से विदा हो गये। सुन्दरनगर पैंशनर्ज़ कल्याण संघ ने इन दिवंगत आत्माओं की शान्ति और सद्गति के लिये प्रार्थना की तथा दो मिनट का मौन रखा।

समाचार

•हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ की प्रदेश कार्यकारिणी का नवगठन २० सितम्बर २०१३ को आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग खरीहड़ी में पैंशनर नेता मंगल सिंह कंवर, पर्यवेक्षक ने चुनाव प्रक्रिया स्वतन्त्र और लोकतान्त्रिक ढ़ंग से निभाई। प्रदेशाध्यक्ष श्री वी. डी. शर्मा ने लम्बे समय तक संगठन का प्रधान रह चुकने पर इस बार प्रधान पद स्वीकार न करने से १२ सितम्बर, २०१३ की हमीरपुर में जिला प्रधानों की बैठक में स्पष्ट इंकार कर दिया था। प्रदेश से पधारे सभी सदस्यों ने सर्व सम्मत्ति से चुनाव सम्पन्न कराने पर जोर दिया। जिला ऊना के प्रधान श्री रमेश भारद्वाज को प्रधान, कांगड़ा के श्री प्रीतम भारती को महासचिव, ऊना के श्री ओ३म राज कंवर को कोषाध्यक्ष, कांगड़ा से श्रीमती स्वदेश सूद व कुल्लू की श्रीमती जावित्री ठाकुर को वरिष्ठ उप प्रधान तथा मण्डी के बी. आर. सुमन को उपाध्यक्ष चुना गया। श्री वी. डी. शर्मा को मुख्य संरक्षक तथा श्री कृष्ण चन्द आर्य को सर्वसम्मति से संरक्षक चुना गया।

•बल्ह विधान सभा के आबकारी एवं कराधान मन्त्री श्री प्रकाश चौधरी की धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा चौधरी को महामहिम राज्यपाल श्रीमती उर्मिला ठाकुर द्वारा ५ सितम्बर को अध्यापक दिवस के शुभअवसर पर राज्य स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें इस अवसर पर चालीस हज़ार रुपये की राशि भी सम्मान के रूप में दी गई। श्रीमती कृष्णा चौधरी ने चालीस हज़ार रुपये की यह राशि दीन–दुःखियों की सहायता हेतु मुख्यमंत्री राहत कोष में जमा करा दी। प्रदेश के लोगों ने श्रीमती कृष्णा चौधरी के इस कदम की सराहना की। स्मरण रहे कि श्रीमती कृष्णा चौधरी बल्ह के लोकप्रिय विधायक आबकारी एवं कराधान मन्त्री श्री प्रकाश चौधरी की धर्म पत्नी हैं।

•हिमाचल पैंशनर्ज़ कल्याण संघ बल्ह खंड की मासिक बैठक २६ सितम्बर २०१३ को प्रातः डडौर में श्री मंगत राम चौधरी की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में प्रदेश संरक्षक तथा जिला मण्डी के प्रधान कृष्ण चन्द आर्य तथा राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित मुख्य संगठन मन्त्री श्री शम्भू राम जसवाल ने भी भाग लिया। बैठक में जिला महामन्त्री श्री भक्त राम आज़ाद की सेहत में निरंतर हो रहे सुधार पर प्रसन्नता व्यक्त की गई। प्रभु उन्हें दीर्घायु दे। मुख्यमन्त्री राहत कोष में अधिकाधिक राशि सहयोग रूप में देने पर बल दिया गया। सुन्दरनगर आर्य समाज मन्दिर में सर्वसम्मति से हुए द्विवार्षिक चुनाव पर सभी ने प्रसन्नता व्यक्त की। इस अवसर पर सचिव श्री जय राम नायक, जिला मुख्य संगठन मन्त्री श्री शम्भू राम जसवाल, कोषाध्यक्ष ललित कुमार, खंड प्रधान मंगत राम चौधरी तथा कृष्ण चन्द आर्य ने भी संगठन को मजबूत करने पर विचार रखे। पैंशनर्ज़ कल्याण संघ का प्रतिनिधि मंडल माननीय आवकारी एवं कराधान मन्त्री श्री प्रकाश चौधरी से मिला। मन्त्री महोदय ने पैंशनरों की सभी समस्याओं का हल करने का आश्वासन दिया।

शहीदों की आत्मा

•डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा,
वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर हरिद्वार

मैं शहीदों की आत्मा हूँ
वर्षों बाद प्रकट हुई हूँ भारत भूमि में
देखने यही कि कहीं मेरी कुर्बानी
व्यर्थ तो नहीं गई।
मैंने झेली है कारावास और हथकड़ियाँ
मैं भटकी हूँ भूखी–प्यासी जंगलों में,
मैं बिछड़ी हूँ माता–पिता, भाई–बहिनों से
मैंने चूमा है फाँसी के फंदे को भी
केवल इसलिए कि भारत माता आज़ाद हो
उसकी संताने खुली हवा में सांस लें
और रामराज्य की हो स्थापना।
पर क्या मेरा सपना साकार हुआ ?
हमें स्वतन्त्रता तो मिली पर
वह लिपटी थी स्वच्छन्दता के आवरण में
हमें मिले तो नेता पर भ्रष्टाचार
और स्वार्थ परता के दल–दल में धंसे हुए
हमने तो बोए थे प्रेम और सौहार्द के बीज
पर ये आतंकवाद के कांटे कैसे उग आए ?
अतः जागो! मेरे साथियो जागो!!
शहीदों का बलिदान व्यर्थ न जाने पाए।
सरहदों पर निगाहें गड़ा कर रखो
शत्रु गिद्ध बन कर मंडरा रहे हैं।
फिर यह राष्ट्र पराधीन न होने पाये
राष्ट्र प्रेम का पहन कवच,
सीमाओं पर डट जाओ,
मातृभूमि के लिए समर्पित हो जाओ।

साभार : आर्य जगत्

www.thearyasamaj.org

महान् सपूत

महर्षि दयानन्द को छोड़कर भारत के इस युग में ऐसा एक भी पुरुष नहीं हुआ जिसने विदेशी भाषा न सीखी हो अथवा विदेश यात्रा न की हो और फिर स्वदेश में सम्मानित हुआ हो। शिक्षक दल के जितने नेता आज तक हो चुके हैं, उन सब पर विदेशी भाषा अथवा विदेश–गमन का ठप्पा लगा हुआ है। उसी के प्रभाव से देशी और विदेशी बाजार में उनका नाम तक बिका है, परन्तु स्वामीजी महाराज पांव से लेकर ब्रह्माण्ड तक भीतर और बाहर से पवित्र स्वदेशी थे। वे अपने ही गुण–ज्ञान से बड़े बने थे। किसी के कन्धे पर बैठकर ऊंचे नहीं हुए थे। जितना मान देशियों और विदेशियों ने उनका किया है, उतना आज तक किसी भी भारतवर्षीय मनुष्य का नहीं हुआ।

महाराज निरपेक्ष भाव से समालोचना किया करते। सब मतों पर टीका–टिप्पणी चढ़ाते, परन्तु इतना करने पर भी उनमें कोई ऐसी अलौकिक शक्ति और कोई ऐसे गुण थे, जिनके कारण वे अपने समय के, बुद्धिमानों के सम्मान–पात्र बने हुए थे। मुसलमान दल के सर्वोपरि नीति निपुण नेता श्रीमान सर सैयद अहमद खाँ महाशय अन्तरात्मा से महाराज के अनुगामी थे। पादरी स्काट ऐसे सज्जन उनको अति आदर देते थे। स्थान–स्थान पर उनको ईसाई मन्दिरों में उपदेश देने के लिए आमन्त्रित किया जाता। लाहौर में तो प्रतिष्ठित मुसलमान सज्जनों ही ने अपने मकान देकर उनका आतिथ्य किया। श्रीयुत केशवचन्द्रसेन जी उनसे अपार प्रेम करते थे। महात्मा देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने उनको श्रद्धापूर्वक सम्मान दिया। महाभूति गोविन्द रानडे तो उनकी भक्तमाला के एक आभावान् मोती थे। सभी प्रान्तों के गण्यमान्य सज्जन उनके चारु चरणों में बैठने में गौरव मानते थे। तीव्र समालोचक होते हुए इतनी विस्तृत प्रियता का माहात्म्य दूसरे किसी व्यक्ति को कदाचित प्राप्त हुआ होगा।

महाराज के उच्चतम जीवन की घटनाओं का पाठ करते समय हमें तो ऐसा प्रतीत होने लगता है कि आज तक जितने भी महात्मा हुए हैं, उनके जीवनों के सभी समुज्ज्वल अंश दयानन्द में पाये जाते थे। वह गुण ही न होगा जो उनके सर्व–सम्पन्न स्वरूप में न विकसित हुआ हो। महाराज का हिमालय की चोटियों पर चक्कर लगाना, विन्ध्याचल की यात्रा करना, नर्मदा के तट पर घूमना, स्थान–स्थान पर साधु–सन्तों के शुभ दर्शन और सत्संग प्राप्त करना, मंगल नाम श्रीराम को स्मरण कराता है। कर्णवास में कर्णसिंह के बिजली की भांति चमकते खड्ग को देखकर भी महाराज नहीं काँपे, तलवार की अतितीक्ष्णधारा को अपनी ओर झुका हुआ अवलोकन करके भी निर्भय बने रहे और साथ ही गम्भीर भाव से कहने लगे कि आत्मा अमर है, अविनाशी है! इसे कोई हनन नहीं कर सकता। यह घटना और ऐसी ही अन्य अनेक घटनायें ज्ञान के सागर श्री कृष्ण को मानस नेत्रों के आगे मूर्त्तिमान बना देती हैं। ऐसा प्रतीत होने लगता हैं कि मानो वे ही बोल रहे हैं।

अपनी प्यारी भगिनी और पूज्य चाचा की मृत्यु से वैराग्यवान् होकर वन–वन में कौपीन –मात्रावशेष दिगम्बरी दशा में फिरना, घोरतम तपस्या करना और अन्त में मृत्युञ्जय महौषध को ब्रह्म समाधि में लाभ कर लेना महर्षि के जीवन का अंश बुद्ध देव के समान दिखाई देता है।

दीन–दुःखियों, अपाहिजों और अनाथों को देखकर श्रीमद्दयानन्दजी क्राइस्ट बन जाते हैं। धुरन्धर के सम्मुख श्री शंकराचार्य का रूप दिखा देते हैं। एक ईश्वर का प्रचार करते और विस्तृत भ्रातृभाव की शिक्षा देते हुए भगवान् दयानन्द श्रीमान् मुहम्मदजी प्रतीत होने लगते हैं। ईश्वर का यशोगान करते हुए स्तुति–प्रार्थना में जब प्रभु दयानन्द इतने निमग्न हो जाते हैं कि उनकी आंखों से परमात्म–प्रेम की अविरल अश्रुधारा निकल आती हैं, गद्गद् कण्ठ और पुलकित–गात हो जाते हैं, तो सन्तवर रामदास, कबीर, नानक, दादू, चेतन और तुकाराम का समय बन्ध जाता है। वे सन्त–शिरोमणि जान पड़ते हैं। आर्यत्व की रक्षा के समय वे प्रातः स्मरणीय प्रताप, श्री शिवाजी तथा गुरु गोविन्दसिंह जी का रूप धारण कर लेते हैं।

महाराज के जीवन को जिस पक्ष से देखें, वह सर्वांग सुन्दर प्रतीत होता है। त्याग और वैराग्य की उसमें न्यूनता नहीं है। श्रद्धा और भक्ति उसमें अपार पाई जाती है। उसमें ज्ञान अगाध है। तर्क अथाह है। वह समयोचित मति का मन्दिर है। प्रेम और उपकार का पुंज है। कृपा और सहानुभूति उसमें कूट–कूटकर भरी पड़ी है। वह ओज है, तेज है, परम प्रताप है, लोक–हित है और सकल कला सम्पूर्ण है।

–स्वामी सत्यानन्द

www.thearyasamaj.org

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000 Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2015

बुक पोस्ट

सेवा में

विश्व वन्धुत्व के दस नियम

विश्व शान्ति के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखे गये आर्य समाज के दस नियम जो प्रत्येक आर्यसमाजी को गायत्री मन्त्र की तरह दिल में बसा लेने चाहिए और तदानुसार आचरण करना चाहिए जो इस प्रकार हैं :–

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं–उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
२. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वान्तर्यामी, अजर–अमर–अभय, नित्य–पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उस की ही उपासना करने योग्य है।
३. वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
६. संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक–आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
७. सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्ताव करना चाहिए।
८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न होना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतंत्र रहें।

साभार

श्री चन्द्रमणि ठाकुर

श्रीमती लीला नरूला, बी. बी. एम. बी. कालौनी सुन्दरनगर ने ₹ ५००, श्री ब्रेस्तु राम दर्शनाचार्य, निवासी चुरढ़, सुन्दरनगर ने ₹ ५००, डॉ. अमरनाथ शर्मा पूर्व जिला आयुर्वैदिक चिकित्सा अधिकारी चैलचौक ने ₹ २००, श्री चन्द्रमणि ठाकुर गांव थरजूण, डा. क्योलीधार, तह. चच्योट ने ₹ २००, श्री डोला राम गांव थरजूण, डा. मझार, तह. चच्योट ने ₹ २००, श्री हुकम चन्द आर्य गांव ठाठलेहड डा. वनखण्डी, तह. देहरा जिला कांगड़ा ने ₹ २००, श्री लेख राम शर्मा गांव व डाक. खरवाड़, तह. भोरंज, जिला हमीरपुर ने ₹ १०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।

इस पत्रिका हेतु अपने ईष्ट मित्रों और शुभचिन्तकों को भी सदस्य बनायें। प्रदेश की आर्य समाजों और आप के पावन सहयोग से ही आर्य वन्दना का अंक हर मास प्रकाशित हो रहा है। हिमाचल प्रदेश की सभी आर्य समाजों का भी पत्रिका संचालन हेतु दिये जा रहे सहयोग पर साधुवाद एवं धन्यवाद व्यक्त करते हैं।

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200

आप शुल्क भारतीय स्टेट बैंक की सुन्दरनगर शाखा (खाता संख्या : 10999879578, कृष्ण चंद आर्य) में भी जमा करवा सकते हैं।

१. आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुन्दरनगर, (खरीहड़ी) (हि० प्र०) १७५०१६
२. उप–कार्यालय, हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, मण्डी (हि. प्र.)

आप अपने लेख निम्न पते पर ई–मेल द्वारा भी भेज सकते हैं : arya.bandana@gmail.com

वैचारिक क्रांति के लिए महर्षि दयानन्द की अमर रचना सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।